Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

सत्यमेव जयते

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"k 17 vad 10 30 vDrcj 2017 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

मजलूम-मजबूर-अन्नदाता

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

ब्रह्मांड रचियता की सोच को वास्तव में रोटी, कपड़ा और मकान पैदा करने वाला अन्नदाता आज हर एक के निशाने पर है। सरकार का कथन है कि किसान को सब्सिडी दी जा रही है लेकिन किसान आत्महत्या करने का मजबूर है और मिडलमैन के रूप में सरकारी कर्मी, बैंकर, व्यापारी व उद्योगपति पहले से ही घात लगाए बैठे रहते हैं।

कहा जाता है किसानी आमदन कर मुक्त है जबकि किसान हर जगह कर अदा करते आता है। मंडी फीस देकर माल बेचता है। मेहनत मजदुरी, धूप-छांव, मौसम की मार कीट पतंगे से बचाते हुए फसल उपजाता है। कभी फसल फेल, कभी कम उत्पादन, कभी दवाई का असर नहीं, कभी मजदुरों की कमी को सहकर, पथराई आंखों के सपने संजोए उत्पाद मंडी तक पहुंचा मंडी फीस, फसल में नमी, कर्मी का हिस्सा, ढेरी में तुलाई से पूर्व चोरी और तब व्यापारी अपना ही बेचा हुआ बीज औने-पौने भाव पर दो चार दिन की खजल-खुआरी के बाद तुलाई करता है । अब रही भुगतान की बात अभी तो बारदाना नहीं आया, चैक नहीं आया, इस प्रकार के सौ बहाने। किसान की फसल उसके सामने तुलने बिकने के बाद अपने कई गुणा लाभांश कमाने तथा कर्ज काटने के बाद किश्तों में भुगतान होता है। तब तक किसान को दूसरी फसल की बुआई, निराई, बीज-खाद का चक्रशुरू हो चुका होता है। उसका भुगतान किनारे रख फिर से उसी का पैसा उसे ऋण के रूप में टनों अहसान के साथ दिया जाता है। दवाई ने काम नहीं किया, नकली दवाई काम

कैसे करती? व्यापारी जिम्मेदारी नहीं लेता कि हमें तो उद्योगों ने बनाकर दिया है, उसे हमने बेच दिया। उसकी सुनवाई कोई करने वाला नहीं बल्कि फसल फेल तो भरपाई कौन करेगा? आखिर आत्म हत्याओं का दौर शुरू होता है जो दिन प्रति दिन बढ़ रहा है।

आज अन्नदाता ही भूखा है फि र उत्पाद की भूमिका कौन निभाएगा? किसान आत्महत्याओं की तस्वीर दशकों से चली आ रही है। वर्ष 1997 से 2010 तक 2 लाख 50 हजार किसान अपनी अहलीला समाप्त कर चुके थे। यह तथ्य 18 राज्यों से बढ़ते हुए 28 राज्यों तक पहुंचे चुके हैं। चाणक्य ने कहा था किसान जवान के परिवार की रक्षा कर लो राजन आपकी सरहदें सुरक्षित और अन्न भंडार में कमी नहीं रहेगी लेकिन आज वास्तविकता में दोनों की ही अनदेखी हो रही है। विडंबना देखें दोनों क्षेत्रों व खेत खलिहान और सरहदों के रखवाले कृषक समाज से ही हैं।

एक पूर्व पत्रकार तथा हिंदु रूरल अफेयर के संपादक श्री पी.सारनाथ तो यहां तक कह गए कि भारतीय स्वतंत्रता का यह स्याह इतिहास है कि वर्ष 1995 से लेकर आत्म हत्याओं का रिकार्ड सर्वाधिक है। उन्होने कहा था कि औसतन एक सी.ई.ओ. एक मजदुर से 30 हजार गुणा अधिक वेतन पाता है। श्रम उत्पादकता 84 प्रतिशत बढ़ गई है लेकिन ग्रामीण श्रमिक की मजदूरी में 22 प्रतिशत की कमी आई है। यूपीए के वक्त 20 मिलियन टन खाद्यान्न 5.45 रूपये प्रति किलो खरीद कर 6.15 रूपये पर गरीबों को वितरित किया जाता रहा है। तब केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शरद पंवार के राज्य की हालात 10 वर्षो से लगातार बिगड़ते रहे हैं। वर्ष 2007 से महाराष्ट्र ने एन सी आर बी को तथ्य देने ही बंद कर दिए। वर्ष 2009 में 17 हजार किसान आत्म हत्याओं को मजबूर हुए जो वर्ष 2004 से अब तक का सबसे गंदा रिकार्ड है। इस 10 वर्ष की अवधि में केवल महाराष्ट्र में 2872 किसानों ने आत्म हत्याएं की जबकि प्रचारित प्रधानमंत्री रिलीफ पैकेज दिया गया तो वह राशि कहां गई? आंध्र प्रदेश दूसरे स्थान पर है। तब प्रधानमंत्री डा0 मन मोहन सिंह ने भी क्षेत्र का दौरा कर रिलीफ पैकेज 110 बिलीयन का घोषित किया आत्म हत्या करने वाले किसान के आश्रितों को एक लाख तक का एक्सग्रेसिया भी दिया गया, जिसमें भी धांधली हुइ और बदनामी से डरते लीपापोती कर दी गई। इसमें एक पालिसी के अनुसार राशि आंबटित नहीं की गई। 2014-2015 में इसी क्षेत्र में आत्म हत्याओं में 42 प्रतिशत बढ़ौतरी दर्ज की गई। वर्ष 2014 के 5650 से बढ़कर 2015 में अत्महत्याओं के आंकड़े एन सी आर बी के अनुसार 8007 पहुंच गए।

केवल वर्ष 2015 में 12602 किसान आत्म हत्याएं हुई, जिनमें से महाराष्ट्र में 3030-37.8 प्रतिशत, तेलंगाना में 1358-17 प्रतिशत,

'k"k i`t&2 ij

शेष पेज–1

कर्नाटक में 1197-14.9 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में 854-10.7 प्रतिशत, मध्यप्रदेश में 581-7.3 प्रतिशत, आंध्रप्रदेश में 516-6.4 प्रतिशत की बढ़ौतरी के रिकार्ड दर्ज किए गए। यहां यह वर्णनीय है कि किसानों की आत्महत्याओं में बढौतरी क्षेत्रों में ही कृषि श्रमिकों की आत्महत्याओं में 31.5 प्रतिशत की कमी दर्ज हुई है। आत्महत्याएं करने वाले किसान सीमांत लघु तथा माध्यमिक ही हैं।

किसान के खेत में पराली जलाने पर जुर्माना लगता है लेकिन औद्योगिक ईकाईयां, ईंट भट्ठे, चलते वाहन, गाड़ियों और घरों में लगे वातानुकूलित उपकरण सार्वधिक प्रदुषण फैलाते हैं लेकिन उन पर कभी प्रतिबंध नहीं लगता। प्रतिबंध है तो समान भाव दिखाओ जो शिरोधार्य होगा। केवल दिल्ली में 2014-15 में 88 लाख वाहन पंजीकृत थे जो अब एक करोड़ का आंकड़ा पार कर चुके हैं। यह एक दमघोटू गैस चैंबर में राज्य को परिवर्तित कर रही है। राष्ट्र को प्रदुषण मुक्त करना सबकी नैतिकता है। वस्तुस्थिति यह है कि हर काम न्यायालय के दखल से होता है। केवल किसान को ही निशाना क्यों बनाया जा रहा है जो पहले से ही ऋण की मार झेल रहा है। एक सर्वेक्षण के अनुसार पंजाब किसान पर प्रति एकड़ के हिसाब से आंके तो 80769 रूपये का ऋण है, जो पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला द्वारा करवाया गया है।

भारतीय संसद में पेश महा-लेखाकार की रिपोर्ट के अनुसार जो 2011 से 2016 तक की तमाम सरकारी फसल बीमा योजनाओं व राष्ट्रीय कृषि बीमा योजनाओं के विषय में है, कि इनसे आज तक किसी किसान का भला नहीं हुआ। दो तिहाई किसानों को तो इन योजनाओं की जानकारी तक नहीं है। संपूर्ण राष्ट्र में केवल 22 प्रतिशत किसानों की फसल का ही बीमा हुआ है। इसमें एक अचंभित तथ्य उजागर हुआ है कि यह बीमा केवल ऋण लेने वाले किसानों का बैंक मैनेजर ने अपने ऋण की वापसी की सुरक्षा संबंधित किसान के संज्ञान में लाए बिना ही किया गया है। ऐसी बीमा योजना का भुगतान भी ना के बराबर होता है क्योंकि राज्य सरकारें सब्सिडी का हिस्सा वक्त पर अदा ही नहीं करती। यह सभी योजना बीमा कंपनियों को ही मालामाल और किसान को बेहाल करती है। अप्रैल तक इन कंपनियों ने 10 हजार करोड़ का लाभांश कमाया। बीमा राशि की किस्तों में भारी बढोतरी हुई है जिसमें 32 प्रतिशत का इजाफा है। वर्ष 2015-16 के 96376 करोड़ रूपये से बढकर 2016-17 में यह राशि 1 लाख 27 हजार करोड़ रूपये हो गई जो अधिकांश से भी अधिक फसल बीमा योजना की राशि है। किसान को बताए बिना किसान क्रेडिट कार्ड से पैसे काटकर फसल बीमा बैंकों द्वारा ही कर दिया गया। यह धांधली सरकारी कर्मी और बैंकर्ज की मिलीभगत से हो रही है। बीमा की राशि का भुगतान कभी भी वक्त पर नहीं होता जबकि सरकार की ओर से निर्देश हैं कि तीन दिन के अंदर भुगतान हो।

हर बार मार किसान पर ही पड़ती है क्योंकि जब फसल आती है तो दाम गिर जाते हैं और व्यापारी के भंडारण के बाद उसी के दाम दोगुने-चौगुने हो जाते हैं। राजनीति का आलम है कि बड़ी कीमतों पर धरना-प्रदर्शन दिखावे के लिए। विडंबना है कि जब भाव गिरते हैं, किसान लूट रहा होता है और किसी पक्ष या विपक्ष के कान पर जूं तक नहीं रेंगती क्योंकि यह एक संगठित समूह है। अन्नदाता कर्ज-मर्ज-गर्ज के दर्द से कहराता है। हाल ही में प्याज के दाम 50 रूपये किलो तक पहुंच गए हैं। दो माह पूर्व आई फसल और महाराष्ट्र में लगातार तीसरे वर्ष भी मार के कारण किसान ने उसे 50 पैसे किलो तक बेचा, जिसकी दो माह में ही कीमत उपभोक्ता से 100 गुणा चार्ज हो रही है। प्याज की नई फसल निकल आई है। व्यापारी इतने दिनों में ही चांदी कूट रहा है और नई फसल पर किसान फिर उसी दुर्दशा को ही झेलेगा। आज उस गरीब मजलूम की सुध लेने वाले चौधरी देवीलाल और दीनबंधु सर छोटूराम सरीखा कोई नहीं है। किसान पुकार-पुकार के कह रहा है कि 'उठ दर्द मदां दे दरदिया ते तक अपना किसान। आज लाखों किसान मर रहे हैं, जिनकी कोई ना पुछे सार। किसान कभी सूखा तो कभी डूबा के चक्र में पिसता रहता है।

यह भी भारी विडंबना है कि हर सरकार किसान कामगार की अनदेखी करती रही हैं, वर्ष 1985 में हरियाणा में दादुपुर-नलवी नहर के निर्माण के लिए किसानों की जमीन अधिग्रहण की गई थी जिससे उत्तरी हरियाणा के किसानों को सिंचाई के इलावा भू-स्तर बढ़ने की उम्मीद जगी थी लेकिन अफसोस की बात है कि 32 वर्ष बाद इस अधिग्रहित जमीन को डी नोटीफाई कर दिया गया है और किसानों को जमीन के बदले 15 प्रतिशत ब्याज सहित पैसा वापिस करने का फरमान दिया गया जो बाद में विपक्ष व किसानों संगठनों के विरोध के कारण जमीन वापिस लेने का फैसला किसान पर मढ दिया गया। यह किसान वर्ग की प्रति घोर अन्याय है जबकि अंबाला मंडल को केंद्रीय भूजल बोर्ड ने जमीन का जल स्तर काफी नीचा जाने के कारण पहले से ही सूखा घोषित किया है और किसानों को लगभग 20 हजार ट्युबवैल कनैक्शन लंबित पड़े हैं।

किसान कामगार के प्रति सरकार व प्रशासन की अनदेखी इन आंकड़ों से भी स्पष्ट उजागर होती है :-

फसल	वर्ष	दाम	वर्ष	दाम
गेहूं	2008	1300	2016	1500
कपास	2008	3500	2016	4500
म1का	2008	1000	2016	1200
ज्वार	2008	1200	2016	1400
कीटनाशक/खाद				
डी0ए0पी0	2008	450	2016	1250
पोटाश	2008	400	2016	900
सुपर	2008	150	2016	300
विधायक का वेतन				
	2008	60000	2016	125000

उपरोक्त आंकड़े दर्शाते हैं कि सरकार व प्रशासन किसान-कामगार के हितों के लिए कितनी गंभीरता से काम करती है। प्रश्न

उठता है कि अगर सबकुछ दो से चार गुणा हो गया है तो किसान की फसल की कीमत इस अनुपात में क्यों नहीं हुई?

देश में किसानों की समस्याओं को उठाने व सरकार के ध्यान में लाने के लिए सैंकड़ों किसान संगठन बने हुए हैं। किसान वर्ग सबसे बड़ा वोट बैंक होने व राजनैतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने से पार्टियों ने भी किसानों के अपने संगठन बना रखे हैं। देश में विभिन्न राज्यों में विभिन्न मुद्दों को लेकर किसानों के आंदोलन सत्त चलते रहे हैं लेकिन फूट डालो व राज करो कि सरकार की रीति-नीति हमेशा सफल रही है। इस वजह से पिछले 7 दशकों में किसान वर्ग, कृषि क्षेत्र एवं ग्रामीण भारत, सरकार की अह्म आर्थिक नीतियों में अपना स्थान नहीं बना पाया है।

पिछले 3-4 वर्षो में किसानों की मूल समस्या को लेकर कोई बड़ा राष्ट्रीय स्तर का आंदोलन नहीं हुआ है। देश में प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस पार्टी द्वारा भूमि अधिग्रहण एवं मुआवजा कानून के मुद्दे को लेकर कुछ समय सक्रियता दिखाई थी। वर्ष 2016-17 में गैर राजनीतिक किसान संगठनों द्वारा तामिलनाडू, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश व राजस्थान आदि राज्यों में कर्जमाफी, फसलों का बीमा क्लेम, एस.एस.पी. पर खरीद, फसलों का लाभकारी मूल्य देने आदि को लेकर आंदोलन चलाए गए हैं। वर्ष 2007 में उत्तरप्रदेश में चुनावों के दौरान बीजेपी द्वारा कर्ज माफी का वादा किया गया तथा जीतने पर पूरा भी कर दिया। इससे दूसरे राज्यों में भी किसानों की अपेक्षाएं बढ़ गई हैं। मध्यप्रदेश में किसानों की बंपर फसलों की लाभकारी कीमते नहीं मिलने व कर्ज के बोझ से आत्महत्याएं करने के मुद्दे पर किसान संगठनों द्वारा आंदोलन किया गया। मंदसौर में गोली कांड हुआ व 6 किसान मारे गए।

किसान आंदोलन के सामने महाराष्ट्र सरकार घुटने टेकने एवं किसानों की कर्ज माफी की घोषणा से उत्साहित होकर तथा मध्यप्रदेश में किसानों पर मंदसौर गोली कांड को लेकर देश में विभिन्न संगठनों ने एकजुट होकर किसानों की मांगों को लेकर संघर्ष करने की सोची व रणनीति बनाई, जिसके परिणामस्वरूप अखिल भारतीय किसान संघर्ष समन्वय समिति का गठन हुआ। इस संघर्ष समिति से सैंकड़ों किसान संगठन जुड़ गए। किसानों की कर्जा मुक्ति एवं फसलों के लाभकारी दो (फसलों की लागत पर 50 प्रतिशत लाभांश जोड़कर) देने संबंधी किसान अधिकारों को लेकर किसान ऋण मुक्ति यात्रा का आयोजन 6 जुलाई से 18 जुलाई तक मंदसौर से दिल्ली तक किया गया। यात्रा 6 राज्यों (मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली) से गुजरकर 18 जुलाई को दिल्ली में जंतर-मंतर पर दो दिन का धरना देकर समाप्त हुई।

किसान संघर्ष समिति को लगभग 160 किसान एवं मजदूर संगठनों का समर्थन प्राप्त हुआ। यात्रा में किसान एवं मजदूर नेताओं में वी एम सिंह, राष्ट्रीय किसान एवं मजदूर संगठन, राजू शेट्टी (सांसद), अया कन्नू (तमिलनाडू), चंद्रशेखर (कर्नाटक), डा0 सुनीलम् (मध्य प्रदेश किसान संघर्ष समिति), रामपाल जाट (किसान महा पंचायत), डा0 दर्शन पाल (पंजाब), योगेंद्र यादव (जय किसान आंदोलन एवं स्वराज इंडिया) आदि प्रमुख थे। किसानों एवं कृषि को संकट से उबारने हेतू प्रोफेसर एम एस स्वामी नाथन द्वारा बताए गए उपाय यहां पर बताना तर्कसंगत होगा। उनके 6 प्रमुख सुझाव हैं :-

किसानों की खेती की जमीन का स्वास्थ्य बनाए रखना, संचाई प्रबधन पर जोर एवं पानी की बूंद -बूंद का उपयोग, नई तकनीकी एवं अनुसंधान का खेती हेतू समुचित उपयोग, डकसानों को सस्ती ब्याज दर (4 प्रतिशत) पर ऋण सुविधा एवं फसल बीमा का ईमानदारी से लाभ, एस एस पी पर फसलों की लांगत पर 50 प्रतिशत लाभांश जोड़कर निर्धारण तथा समुचित खरीद एवं भंडारण की व्यवस्था, छोटे किसानों को गांवों में मिलकर (सहकारिता के आधार पर) खेती करने हेतू प्रोत्साहित करना, जिसमें हैल्पगुप मदद कर सकते हैं।

इन सब उपायों को लागू करने में सरकार की इच्छा शक्ति सबसे अह्म बताई गई है। इसी संदर्भ में हाल ही में प्रोफेसर वी एस व्यास, कृषि अर्थशास्त्री एवं प्रधानमंत्री के पूर्व आर्थिक सलाहकार द्वारा किसानों को आर्थिक संकट से उभारने व कृषि को लाभकारी धंधा बनाने पर अपने उद्बोधन में कमोवेश प्रो0 स्वामीनाथन के विचारों को दोहराया है। कृषि संकट के प्रमुख कारणों में उन्होने खेतों की जोत का छोटा होना, खेती करने की तरीके में आधुनिक बदलाव का ना होना, खेती की लागत बढ़ना (विशेषकर वाणिज्यिक फसलों की), फसलों का बाजार में लाभकारी मूल्य न मिलना, खेती में जोखिम का बढ़ना आदि बताए। प्रो0 व्यास ने बताया कि कृषि क्षेत्र की प्रमुख समस्या बाजार की है। यहां पर सरकार के दखल की जरूरत है, जिससे खेती घाटे में ना रहे। आज उत्पादन की समस्या नहीं है, उत्पादन पर लाभ प्राप्त करने की समस्या है। दूसरा, खेती पर लागत कैसे कम हो इस पर ध्यान दिया जाना जरूरी है। देश में 85 प्रतिशत छोटे किसान हैं। गांवों में किसानों द्वारा सामूहिक एवं सहकारी खेती को बढ़ाया देने की सोच को विकसित करना जरूरी है जिससे लागत कम हो सके। स्वंय सहायता समूह एवं महिलाएं इस अभियान में मदद कर सकती हैं। सरकार सभी कृषि फसलों की एम एस पी तय करे। फसलों की कीमतों का निर्धारण वास्तविक लागत के आधार पर किया जाए, जिस तरह से औद्योगिक उत्पादनों का कीमत निर्धारण किया जाता है।

इसी प्रकार खेती के संकट को दूर करने के लिए सरकार की इच्छा शक्ति, विज्ञान का सहयोग एवं किसानों में शिक्षा एवं जागृति होना आवश्यक है। किसान ऋण मुक्ति यात्रा का लक्ष्य भी किसानों को एकजुट कर किसानों की आवाज को बुलंद कर सरकार की इच्छा शक्ति को जागृत करना तथा कृषि क्षेत्र व किसान वर्ग को सरकार की प्राथमिकता के पटल पर लाना आवश्यक है।

डा0 महेन्द्र सिंह मलिक
आई.पी.एस., सेवानिवृत,
प्रधान जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

चौधरी चरण सिंह का विचार दर्शन एवं संघर्ष

– यशपाल कादियान, करनाल

किसानों, मजदूरों और दलितों के मसीहा पूर्व प्रधान मन्त्री स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसम्बर 1902 को जिला मेरठ के नागपूर गांव के साधारण किसान चौ. मीर सिंह तथा श्रीमती नेत्री देवी के यहाँ हुआ। वकालत की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने 1936 में राजनीति में प्रवेश किया।1936 से 1984 तक अनेकों बार विधायक, मन्त्री, मुख्यमंत्री, देश के गृहमन्त्री, वितमंन्त्री, उपप्रधानमंन्त्री और प्रधानमन्त्री के पद को सुशोभित किया। दिसम्बर 1985 में पक्षाधात का शिकार हो गये जिस कारण चलने फिरने में असर्मथ हो गये तथा देश व विदेशों के उच्चकोटी के डॉक्टरों के उपचार के बावजूद भी 29 मई 1987 को सदा के लिए चिर निद्रा में सो गये। उनका दाह संस्कार राजधाट के पास किया गया जिसमें देश के लाखों किसानों और मजदूरों ने नम आखों से विदाई दी। इस स्थल को किसान धाट के नाम से जाना जाता है और उनके जन्म दिवस व पुण्य तिथी पर हजारों की सख्यां में किसान व मजदूर अपने सच्चे हितेषी, कर्मठ, ईमानदार, संघर्षशील, निडर, राष्ट्रवादी यर्थाथवादी, कर्मयोगी एवं मसीहा को याद करतें हैं और उनके कार्यों से प्ररेणा ग्रहण करतें है।

पारिवारिक जीवन व हरियाणा से सम्बन्धः

चौधरी चरण सिंह का हरियाणा से गहरा सम्बन्ध रहा है क्योकि इनके पुर्वजों का बल्भगढ से गहरा सम्बन्ध रहा है। इनका विवाह सोनिपत जिला तहसील खरखोदा के गांव (गडी कुण्डल) के प्रतिष्ति आर्यसमाजी परिवार में चौ. गंगा राम राणा की पुत्री गायत्री देवी के साथ 4 जून 1925 को हुआ। श्रीमती गायत्री देवी ने जालन्धर के आर्य कन्या विधालय से मैट्रिक पास की थी। आर्यसमाज के गहरे प्रभाव के कारण राणा परिवार मूर्तिपूजा, दहेजप्रथा, शराब, फिजूलखर्ची इत्यादी का आजतक भी धोर विरोधी रहा है। आर्यसमाज के प्रभाव के कारण इस परिवार में पुराने समय से लेकर आजतक लडकियां, महिलाओं और युवकों को, अच्छे सस्कार के साथ उच्च शिक्षा दी जाती रही है। इय परिवार की लडकियों ने जालन्धर, दिल्ली, चंडीगड से उच्च शिक्षा ग्रहण की है। इस परिवार के सदस्य पूर्व विधायक एवं पूर्वमन्त्री, ओमप्रकाश राणा, चौ. शीश राम, कुलदीप सिंह, सदबीर सिंह, हरियाणा के पूर्व मुख्य वास्तुकार चौ. संसार चन्द राणा, प्रोफेसर डॉ वेदवती सभी सुरक्षित और उच्च पदों पर रहे हैं। इस परिवार से दिल्ली के सेशन जज चौ. छाज्जू राम देश के प्रमुख शिक्षाविद् एवं दिल्ली विस्वविधाालय के पूर्व उप–कुलपति, पूर्व राज्यपाल और पूर्व सांसद डॉ सरूप सिंह, प्रमुख कृषि विज्ञानिक डॉ. विरेन्द्र लाठर, प्रस्तुत लेख के लेखक एवं पत्रकार यशपाल कादियान का भी गहरा सम्बन्ध एवं रिश्तेदारी रही है।

चौधरी चरण सिंह व श्रीमती गायत्री देवी के घर पाँच पुत्रियों और एक पुत्र का जन्म हुआ। जिनके नाम सरोज, सत्या, वेद, डॉ. ज्ञान देवी और पुत्र चौधरी अजीत सिंह है जो अनेकों बार भारत सरकार के विभित्र विभागों के मन्त्री रह चुके हैं। चौधरी अजीत सिंह के पुत्र जयन्त चौधरी हैं जो मथुरा से 2009 में सासंद बने लेकिन अभि ये हार गए थे।

चौ. चरण सिंह के जीवन में उनकी पत्नी गायत्री देवी की मुख्य भूमिका रहीः

प्रत्येक सफल व्यक्ति के पीछे उनकी पत्नी की प्रमुख एवं महत्वपूर्व भूमिका रहती है इसी प्रकार गायत्री देवी चौ. चरण सिंह की प्रमूख सहयोगी रही। श्रीमती गायत्री देवी बहुत ही सुशिक्षित, सुशील, कर्मठ, ईमानदार, मिलनसार, मृदुभाषी, दयालु, सभ्य महिला थी जिन्हानें अपनें बच्चों का पालनपेषण तो अच्छे ढंग से किया ही बल्कि चौ. साहब को भी कदम कदम पर सहयोग व सहायता दी। वो ग्रामीण किसानों, मजदूरों और पार्टी कार्यकर्ताओं से बहुत ही अच्छे ढंग से मिलकर उनकी मुलाकात कराती थी।

श्रीमती गायत्री देवी दो बार विधायक रही और दो बार सांसद रही। उन्होनें विधानसभा और लोकसभा में अपने सुझावों और व्यवहार के कारण प्रभावशाली छाप छोडी। उन्होनें चौ. चरण सिंह को ऊँचे पदों पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण सहयोग व योगदान दिया। कदम–कदम पर चौ. चरण सिंह द्वारा लिए गए महत्वपूर्ण निर्णयों में गायत्री देवी की भूमिका होती थी।

लेखक को गायत्री देवी जी से मिलने के बारें में अनेकों सुअवसर मिले जिसमें चौ. चरण सिंह व अपने बारें में अनेकों वृतान्त बताये। साधारण कार्यकर्ता उन्हें बडे आदर व सम्मान से माता जी के नाम से पुकारते थे।

चौ. चरण सिंह के चिन्तम व कार्यशैली पर प्रभावः

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर समकालीन परिस्थितियों का प्रभाव पडता है अतः चौ. चरणसिंह कोई अपवाद नहीं थे वो भी समकालीन परिस्थितियों के शिशु थे। चौधरी साहिब पर सर्वाधिक प्रभाव बाल्यकाल में पारिवारिक परिस्थितियों का पडा। वह अपने पिताजी व अन्य परिवार के सदस्यों के साथ खेतों में कृषि कार्यों में हाथ बटातें थे। वह खेत की मिट्टी की कीमत अच्छी प्रकार जानते थे। उन्होनें नजदीक से किसानों और मजदूरों की दयनीय हालत को देखा और समझा और इसलिए ही वह पूरा जीवन किसानों और मजदूरों के कल्याण और उत्थान के लिए निंरतर संघर्ष करते रहे। इसके अतिरिक्त उनके चिन्तन पर महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश से उन्होनें सादगी, निडरता, उच्च चरित्र, ईमानदारी, सज्जनता के सिद्धातों को ग्रहण करके उनका पालन किया। वे राष्ट्रीय आन्दोलन के जननायक महात्मागांधी के सिद्धातों से बहुत अधिक प्रभावित थे। उन्होनें खादी की टोपी, कुर्ता और धोती को पूरा जीवन अपनाया। वे अन्य राजनेताओं की भातिं आडम्बरवादी नहीं थे। उनकी इस पोशाक का सम्बन्ध गरीब किसान व मजदूर से बहुत गहरा था।

जिसके पास विद्या रूपी नेत्र नहीं है, वह अंधे के समान है। –अज्ञात

चौ. चरण सिंह के विचारों पर गीता का प्रभाव भी गहरा था। वे कर्म के सिद्धातों को महत्व देते थे इसलिए उन्हें सच्चा राजनैतिक कर्मयोगी कहा जाता है। लगभग 55 वर्ष तक राजनीति में रहते हुए परिवार को समुचित तरीके से चलाते हुए उन्हानें कभी नैतिकता को नही छोडा। आर्यसमाज के प्रभाव के कारण वे मूर्तिपूजा, आडम्बरवाद, दहेजप्रथा, शराब और फिजूलखर्चा के घोर विराधी रहे। वे विधवा, स्त्री शिक्षा के पक्षधर थे ताकि महिला सशक्तिकरण हो सके, क्योकि उस समय महिलाओं की स्थिति बहुत दयनीय थी। चौ. साहब एवं बडे राजनेता तो थे ही इसके अलावा वो बहुत बडे समाज सुधारक भी थे।

चौ. चरण सिंह एक प्रमुख अर्थशास्त्री के रूप मे

चौ. साहब एक राजनेता के साथ साथ एक बहुत बडे अर्थशास्त्री भी थे। उनके भाषण हमेशा आंकडो पर आधारित हाते थे। उन्होनें कृषि व लधु कुटीर उधोग धन्धों के बारें में गहराई से अध्ययन किया। उन्होनें भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में शोध पर आधारित अनेकों पुस्तकें लिखी। वे एक शोधार्थी की भातिं दिल्ली के प्रमुख पुस्तकालय विधालय 1970 के दशक में 12 खम्बा रोड पर स्थित मण्डी हाउस पुस्तकालय में अध्ययन करने के लिए जाया करते थे और लखलऊ में भी बडे–बडे पुस्तकालयों में जाते थे।

चौ. चरण सिंह के जीवन के सम्बन्ध में उपरोक्त अध्ययन से सपष्ट होता है कि वे सम्पूर्ण गान्धीवादी, महर्षि दयानन्द सरस्वती के परम अनुयायी, प्रमुख अर्थशास्त्री, उच्च स्तरीय विद्धान, राजनेता, निर्भक, सिद्धांतवादी, राष्ट्रवादी एवं पूंजीवादी के धोर विरोधी थे और गान्धीवादी, किसान–मजदूरवादी चिन्तक थे। वे पं. जवाहरलाल नेहरू व महात्मा गांधी की भातिं विभित्रता में एकता के समर्थक थे और यही कारण है उनके अनुयायियों में हिन्दु, मुसलमान दानों की अगाध आस्था थी। इस दृष्टि से वे धार्मिक अलगावाद विरोधी थे और पूर्ण रूप से धर्म निरपेक्ष व्यक्ति थे। यही धर्मनिरपेक्षता आज समय की मांग है।

सम्पूर्ण संचित शक्ति से को समर्पित रामसिंह फौजदार जी

ओम प्रकाश अग्रेन

समाज मे ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो अपने शासकीय दायित्वों के साथ.साथ अपने परिवार और सामाजिक दायित्वों को भी पूर्ण मनोयोग से निर्वाह करते हैं। ऐसे ही व्यक्तियों की श्रेणी में ककूवा, जिला आगरा के एक सामान्य कृषक परिवार में एक जनवरी 1930 को जन्में श्री रामसिंह फौजदार जी (आर एस फौजदार) थे। उनका जन्म माता श्रीमती नारायणि देवी जी की कोख से हुआ। पिता भूपसिंह जीं, चाचा किशनसिंह जी और श्रीमती कलावती जी एवं बडीं बहिंने मोहिनी, पूरनदेवी, छोटी हीरा और शांति, छौटे भाई निंरजन और सबलसिंह के संयुक्त परिवार में स्नेह, लाड–प्यार से उनका पालन पोषण हुआ। यह परिवार जुगती बाबा के नाम से प्रसिद्व हैं। सम्पूर्ण भारतवर्ष के सजातीय संगठनों में आपकी सेवाओं तथा लेखों की सराहना होती रही हैं। राष्ट्रीय विचार धारा जनहित समाज सेवा कें संस्कार आपको विरासत में अपने परिवार से मिले। वैसे तो वर्ष 1930 के राष्ट्रीय आन्दोलन में ही आपके गॉव ककूवा का घर स्वतंत्रता सेनानियों का आश्रय बन गया था, परन्तु सन् 1942 तक आपके पैत्रक निवास ने स्वतन्त्रता सेनानियों कीं छावनी का रूप ग्रहण लिया था। सरदार बल्लभ भाई पटेल ने वर्ष 1936.37 में आगरा भ्रमण के दौरान इसी ग्रामीण छावनी की कुटिया को रात्रि विश्राम करके पवित्र कीया था। आपके चाचा स्व किशन सिंह जी जुगती बाबा तथा पिता स्वीय भूपसिंह जी पुलिस की आखों में धूल झोकंकर आदोंलनकारियों से जुडे रहें। राषट्रीय आंदोलनों में पारिवरिक संलग्नता के कारण फौजदार जी की प्राथमिक शिक्षा भी प्रभावित हुई। वर्ष 1942 के आंदोलन में जबकि आप टाउन स्कूल, अछनेरा में सातवीं के विधार्थी थे, पडाई छोडकर आंदोलनकारियों में शामिल हो गए, लेकिन बाल्यावास्था के कारण पुलिस ने गिरफतार नहीं किया। सन् 1947 में अपनें छोटे भाई निंरजन सिंह एंव 20–25 नवयवुको के साथ गांव में परेड करते हुए और एक टुकडी ने गिरफतार कर लिया। इन्हें सेवला (आगरा) की एक धर्मशाला में ले जाकर कैद कर लिया गया। सभी नवयुवक अवयस्क थे। अतः शाम को छोड दिया गया।वर्ष 1945 से 1947 तक आपने मंडल कॉग्रेस कमेटी रोहता, आगरा के कार्यालय में मंत्री पद पर निःशुल्क सेवा की। 1947 में कॉग्रेस सेवा दल में सेवादल सगंठन को कैपिटल पद पर रहकर किया। वर्ष 1950 में प्रान्तीय रक्षक दल उतर प्रवेश दारा आयोजित रहमिमाबाद लखलउ शिविर में आपने लगाातार एक माह भागिदारी करके आठ हजार एकड जंगल को साफ करके उसे कषि उपज हेतु बनाकर, राष्ट्र को समर्पित करने का, सरहनीय कार्य किया। सन् 1950 में आपका विवाह मथुरा जिले के गांव भूरिया नगला के खूटेल गोत्रीय स्वः भंबर सिंह फौजदार की सुपुत्री श्री मति रामकुमारी के साथ सम्पन्न हुआ। ग्रामीण परिवेश तथा राष्ट्रीय आंदालोन की लहरो के मध्य रुके अध्ययन को पुनः प्राम्भ करके वर्ष 1954–55 तक ग्राम पंचायत मंत्री की सेवा के साथ–साथ आपने बी,ए., साहित्यरत्न की उपाधियॉ प्राप्त की। जब आप एम. ए में अध्ययनयत थे उसी समय वर्ष 1956 में आपकी नियुक्ति सहायक खण्ड विकास अधिकारी (पंचायत) के पद पर रहकर आपने शासकीय दायित्वों के साथ–साथ समाज सेवा वृति का पूर्ण मनोयोग से निर्वाह किया। समय.समय पर आपको उच्च अधिकारियों द्वारा सम्मान दिया गया। आप 31 दिसम्बर 1987 को जिला पंचायत

राज अधिकारी, देहरादून उ.प्र. के राजपत्रित पद से सेवानिवृत हुए। शासकीय सेवाकाल से ही आप सजातिय सेवा के प्रति समर्पित रहे। परन्तु वर्ष 1977 में राष्ट्रीय आपातकाल के समय आपने जातिय जगत में समाज शिक्षा व संगठन के लिए 'मीडिया' संचार साधनों की रिक्तता को अनुभव किया। सन् 1978 में 'जाट समाज' पत्रिका का बीजारोपण किया। जाट समाज पत्रिका के संपादन और संचालन का दायित्व अपने इकलौते पुत्र राजेन्द्र फौजदार एम. ए,एल.एल.बी. को सौपा। उस समय श्री राजेन्द्र फौजदार वकालत की पढाई करते हुए एक दैनिक अखबार में सह सम्पादन के रुप में कार्यरत थे। इन्हौंने भी नौकरी और व्यवसाय को महत्व न देते हुए समाज सेवा एवं पत्रिकारिता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। बडी पुत्री मंजु फौजदार एम.ए.बी.एड ने सह–संपादन का दायित्व संभाला। जातीय समाज के लिए आपकी यह बहुत बडी देन है। सेवानिवृति के प्श्चात सामाजिक रुडियों, कुरितियों को वैज्ञानिक युग के साथ रुपान्तरण करने को आप प्रयासरत रहे। विभिन्न सामाजिक जातिय सम्मेलनों, अखबारों द्वारा समाज को जागृत करने में आप ही नहीं, अपितु आपका पुरा परिवार तन–मन धन से जुटा रहा है। आपकी मान्यता रही कि जातिय जगत को " एक मंच और एक पंच" का नारा आज के युग में स्वीकार करके अपना राजनैतिक व सामाजिक वर्चस्व स्थापित करना चाहिए। देश भर की संस्थाओं से आप अपेक्षा करते थे कि शहीद गोकुलसिंह, महाराजा सूरजमल, वीर तेजाजी, धन्ना भगत, राजा महेन्द्प्रताप, चौधरी छौटूराम, किसान केसरी बलदेवराम मिर्धा, स्वामी केशवानन्द आदि महापुरुषों का राष्ट्रीयकरण होना चाहये। इनके जन्म दिन, श्राद्ध दिवस मनाये जावें। भारतवर्ष तथा विदेश तक में बसे जाट भाइयों को अपने महापुरुषों के स्मरण दिवसों को विभिन्न श्रेत्रों में निर्धारित करके आयोजन करने चाहिए, ताकि समस्त समाज में जागरुकता दिखे। इसी प्रकार गढ मुक्तेश्वर, नौचन्दी मेला मेरठ, भरतपुर दशहरा, तेजाजी मेला नागौर तथा पुष्कर, उज्जैन, हरिद्धवार के स्नान पर्वो का परम्परगता प्रति वर्ष उक्त विभिन्न अवसरों पर हम मिलकर हम एक दूसरे के नजदीक आ सके। अपने गांव ककुवा में सन् 1967 में आर्य समाज मंदिर हेतु भूमि खण्ड में परिवार के सहयोग से यज्ञशाला एवं गांव के सहयोग से उसकी चारदीवारी का निर्माण कराया। सन् 2005 में इसकी मरम्मत भी करायीं सन् 1964 में आपने बच्चों की शिश्रा हेतु आगरा नगर की श्रेष्ठ कालोनी न्यू आगरा में एक प्लाट खरीदा। जिसमें 1968 तक धीरे–धीरे मकान का निर्माण कराके परिवार को स्थायी रूप से बसाया। अन्यथा सरकारी नौकरी में स्थानान्तरण होने पर बच्चों की शिक्षा में बहुत की कम जाट परिवार निवास करते थे। उन परिवारो का भी आपस में कोई सर्म्पक न था। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी फौजदार जी बहुत दृड निश्चयी, कर्मठ, व्यवहारशील और प्रभावशील व्यक्तित्व की धनी महिला थी। कालोनी के एक विजातीय परिवार ने उन्हें अपने एक सजातीय आयोजन में आमंत्रित किया। इस आयोजन में भाग लेकर उन्हें प्रेरणा मिली कि शहर में हमारे भी तो परिवार होंगे, तो हम क्यों नहीं आपस में मिलते जुलते ? यह प्रश्न उन्होंने अनेक बार जब श्री फौजदार जी के समक्ष रखा तो उन्होंने नौकरी से सप्ताहिक प्रारम्भ कर दिया। उन्हें ज्ञात हुआ कि कई वर्ष पूर्व आगरा जाट सभा का संगठन था जो की पूरी तरह निषक्रिय एवं समाप्त हो गया है। फौजदार जी ने निरंतर आठ वर्षो तक परिश्रम करके आगरा शहर के एक–एक परिवार से स्वयं तक समपर्क करके सगंठन से जोडा। पूरे जिले के ग्रामिण श्रेत्र को भी जोडा और 1977–78 में जिला जाट महाभारत, आगरा का पुरूत्थान किया। आप संस्था के संस्थापक महामंत्री बने। जिला जाट महासभा द्वारा आर्यान पेशवा राजा महेन्द्र प्रताप का सार्वजनिक नागरिक अभिनन्दन, मिढाकुर एवं अकोला में विशाल जिला सम्मलेन आयोजित किये। उन्होनें समाज को अधंविश्वास, कुरितियों, मृत्युभोज के खिलाफ एक दशा दी। जिला स्तर पर जाट सभा द्वारा नई परम्पराओं का चालन आपकी सूझ–बूझ का ही परिणाम है। आगरा, मथूरा में आयोजित अ.भा. जाट सम्मेलनों में आपकी अहम भूमिका रही थी। वर्तमान में भी आप 2011 से जिला जाट महासभा के अध्यक्ष थे। सन् 1983 से 91 तक अ.भा. जाट महासभा के मत्रीं और 1991 से उपाध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय कार्यकारिणी में जुडे थे। आप 1991 से 1996 तक भारतीय किसान यूनियन के जिलाध्यक्ष बतौर 1997 से 2005 तक प्रदेश उपाध्यक्ष रहे। महाराजा सूरजमाल शिक्षा सस्थां, दिल्ली, जाट धर्मशाला पुष्कर के आजीवन सदस्य थे। अपने सजातीय सगंठनो के साथ–साथ आपने अन्य सामाजिक संगठनो में भी सकिय भागीदारी निभाई। आप जाट–राजपूत क्षत्रीय महासभा, राजीर्ष राजा महेन्द्र प्रताप एकता सस्थान, वीरवार शहीद गोकुलसिंह ट्रस्ट के संस्थापक थे। ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित मेलों, दगलों, गायकों, लेखकों को आप सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्य बनाये रखने का साधन मानते थे। आप ऐसे कार्यक्रमों में उपस्थिति होना अपना कर्तव्य समझते थे, स्वाध्याय एवं सृजनात्मक कार्यो में उनकी विशेष रूचि थी। विभिन्न दैनिक अखबारों एवं पत्र–पत्रिकाओं में उनके लेखों का प्रकाशन होता रहता था। स्वतंत्रता आंदोलन से सम्बन्धित अपने कुछ संम्मरण उन्होंने लिखने प्रारम्भ किये थे जो कि जाट समाज पत्रिका में छपते रहे हैं। शासकीय सेवा के दौरान अनेकों बार कार्य श्रेष्ठता एवं कुशलता के लिए शासन द्वारा पुरस्कृत एवं जनप्रतिनिधियों द्वारा सम्मानित किये गये। राजस्थान, उतर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा की प्रान्तीय एवं जिला संगठनों द्वारा विभिन्न जातीय सम्मानों (अलंकरणों) द्वारा सम्मानित किये गये। दिसम्बर 1998 में राष्ट्रीय अध्यक्ष चौं. दारासिंह ने मूम्बई में आपको 'जाट रत्न' से सम्मानित किया। आपके परिवार में एक पुत्र, तीन पुत्रियां, पुत्रवधू और दो पौत्र हैं। पुत्र राजेन्द्र फौजदार जाट समाज पत्रिका के सपांदक लेखक कहानीकार, समाज सेवक हैं। इसके अतिरिक्त कृषि एवं रियल स्टेट का उनका व्यवसाय भी है। पुत्रवधु श्रीमती समोज गोछवाल हौजखास गांव दिल्ली के निवासी सुप्रसिद्व समाज, शिक्षाविद महाराजा सूरजमल संस्था के संस्थापक मंत्री डॉ. बलवीर सिंह की सुपुत्री हैं। श्रीमती सरोज अपने उच्च संस्कारों एवं सद्व्यव्हार से परिवार की उच्च परम्पराओं को निभा रही हैं। बडी पुत्री श्रीमती मंजू फौजदार पत्नी श्री कमोद सिंह

जिंदगी की जिम्मेदारी कोई बोझ की चीज नहीं है। वह आनंद से ओत–प्रोत है। –विनोबा भावे

चौधरी, जनरल मैनेजर अम्बुजा सीमेंट कोलकता, दूसरी पुत्री श्रीमती पुष्पा फौजदार (विभागाध्यक्ष अग्रेंजी) सैनिक स्कूल चितौड पत्नी श्री राजेश कुमार निर्देशक हिन्दुस्तान कॉलेज इंजीनियिरंग, मथुरा एवं छोटू पुत्री श्रीमती चेतना फौजदार संयुकत कमिशनर म. प्र. शासन., इन्दौर पत्नी श्री संजय कुमार कमिशनर म.प्र. शासन जबलपुर हैं। आपके दो पौत्र सिद्धार्थ एवं पुरूषार्थ कृषि, रियल एस्टेट एवं फाइनेंन्स के व्यवसाय में संगलन हैं। श्री फौजदार जी ने अपनी संचित शक्ति और अनुभवों को राजनीति से दुर रखकर अपने समय 27 मार्च, 2017 तक समाज सेवा में समर्पित किया। स्वतन्त्रता संग्राम की लडाई के दौरान इनका परिवार राष्ट्रीय आन्दोलनकारियों की छावनी था, परन्तु आज जाट समाज का दिशाबोधक बनकर प्रगट हुआ हैं।

क्या है सर्वखाप पंचायत

ओमप्रकाश

पंचायत नाम तो भारत में और विशेषकर विशाल हरियाणा में बोला जाता है वरना तो इस प्रकार से सामाजिक संसठन सारी दुनिया में प्रचलित है। समाज में न्याय प्रक्रिया का सिलसिला तो सृष्टि की रचना के तुरन्त बाद ही शुरू हो गया था जो सारी दुनिया में आज तक स्थापित हैं या अपनाया जा रहा है। सामाजिक परम्पराओं एवं मान्याताओं का पंचायत के साथ गहरा सम्बन्ध है या पंचायत सामाजिक परम्पराओं से प्रभावित है। आज आम तौर पर सारी दुनियां के संविधान लिखित हैं परन्तु लगभग, एक समय दुनिया में सबसे अधिक देंशो पर शासन करने वालो इंग्लैण्ड का संविधान आज भी परम्पराओं पर आधारित है। वहां की परम्पराओं का न केवल सरकार पर प्रभाव है अपितु वहां के सरकारी न्यायालय भी इंग्लैण्ड की परम्पराओं से बहुत हद तक आज भी प्रभावित हैं। धुर कट्टर तानाशाही सरकारों से लेकर महान् प्रजातांत्रिक देशों की सरकारों तक सभी सामाजिक परम्पराओं का लोहा मानती रही हैं और आज भी मान रही हैं। क्योंकि जनवाणी का तो ईश्वर भी आदर करता है। बल्कि एक लोकोक्ति भी है, 'जनवाणी भगवान की वाणी है।' महान् कहानीकार मुंशी प्रेमचंद ने भी 'पंच–परमेश्वर नामक कहानी में यह दर्शाया है कि ईश्वर पंचो में बसता है यानि पंचों के निर्णय ईश्वरीय नियमों पर आधारित हैं। जहां 'पंच वहां परमेश्वर' की बात आमतौर पर समाज में प्रचलित है। पंच या पंचायत नाम के शब्दों को अन्य देशो में, अपनी सामाजिक रस्मों एवं बोलियों के आधार पर किन्ही अन्य शब्दों एवं नामों से जाना जाता है परन्तु उन सबका आशय या मन्तव्य एक ही है। पंच या पंचायतें न्याय शब्द से लक्षित हैं। इसीलिए पंचायत को 'सामाजिक न्यायालय' की संज्ञा दी गई है।

पंचायती संगठनों में 'सर्वखाप न्यायालय' पुराने संगठनों में से एक है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर सर्वखाप पंचायत की स्थापना 701 विक्रमी संवत को, त्रिवेणी के तट पर विधि विधान के अनुसार सम्राट हर्षवर्धन ने की थी। सर्व+ख+आप सर्वखाप में 'सर्व' का अर्थ है व्यापक या अधिक, 'ख' कर अर्थ है आकाश, ' आप' का अर्थ है जल यानी पवित्र और शांति दायक पदार्थ। अर्थात जो सब स्थानों पर आकाश की भांति निर्मल एवं शांति दायक हो। 'पंच' निष्पक्ष, सत्यवादी, व्यवहारिक, न्यायप्रिय, धटित समस्या से परिचित व्यक्ति को 'पंच' कहा जाता है। तथा पांच से अधिक पंचों के समूह को 'पंचायत' की संज्ञा दी जाती है। चक्रवती सम्राट शिव के पुत्र गणेश ने गुणों की स्थापना की थी जिसका कारण उनका नाम गणेश पडा। उन्हीं गणों को महाभारत काल में 'यौधेय' कहा गया। उन गणों तथा यौधेयो के मुखिया अपने–अपने समय में सामाजिक तथा न्यायकि संगठन को महाराजा हर्षवर्धन ने सर्वखाप पंचायत का नाम दिया। सर्वखाप पंचयात को महाराजा हर्षवर्धन के शासकिय काल में अपनाया गया। महाराजा हर्षवर्धन चूंकि जाट राजा था अतः सर्वखाप पंचायत को जाटों ने अपनाया, इसका संगठनात्मक ढांचा तैयार किया और प्रदेश तथा राजस्थान का भी वह भू–भाग इसमें शामिल रहा है जहॉ जाटो की बहुतायत है। सर्वखाप के क्षेत्र को देशवाली जाटों का क्षेत्र माना जाता है। जहां प्रणाली का पुरा सम्मान किया जाता है। विवाह शादियों में यहां के जाट मां, दादी तथा अपना गोत्र बचाकर शादियां करने आये हैं। सामाजिक मर्यादा के अनुसार उसी गांव में या उपनगर में आपस में शादिंया नही की जाती। यहां तक गांव की सीमा से लगते अन्य गोत्र के गांव में भी आपसी नाते–रिश्ते नहीं किये जाते हैं। अतः शादिंया करते समय चार गांव में एक से अधिक गोत्र, हाने पर बडे गोत्र वाले छोटे गोत्रीय लोगों के साथ भाई–चारे का पूरी तरह लिहाज करते है। आपसी समन्यवय के आधार पर एक गांव में कई गोत्र हाने पर, सब आपस में शादी करते समय एक दूसरे के गोत्र का सम्मान स्वरूप आदर करते हैं और उन सभी गोत्रों को बचाकर शादी की जाती हैं जिन–जिन गोत्रों के लोग उस गांव में बसते हैं। जाट वर्ग तो इस प्रथा को पूरी तरक निभाता ही है, गांव में बसने वाली अन्य बिरादरियों को, जाटों की ओर से यह छूट है कि जैसे चाहें अपनी जाति में नाते–रिस्ते स्थापित करें।

सर्वखाप का गठन – सर्वखाप का गठन गांव की इकाई से लेकर इसके पूरे कार्यक्षेत्र तक होता है। इसकी श्रृंखला गांव में परिवार, कई परिवार को मिलाकर बना ठोला, कई ठोलों को मिलाकर बना पाना (पट्टी कई पानों को मिलाकर बना गांव, कई गांव को मिलाकर तपा, थाम्बा, चौगामा, अठंगावा, बरहा आदि तथा कई तपें मिलकर बनी थाप (पाल) और सब खापों को मिलाकर बनता है सर्पखाप। गांव में ठोले के मुखिया को ठोलेदार, गांव के बडे को मुखिया, तपे के बडे को तपेदार, खाप के बडे को खाप प्रमुख तथा सर्वखाप के बडे को प्रधान कहा जाता है। सर्वखाप के नियम अनुसार इसके गठन से लेकर खान प्रमुख तक यभी पीढी दर पीढी इसी प्रकार के क्रमबद्ध तरीके से चलता आ रहा

धैर्य रखना मुश्किल होता है, लेकिन उसका फल मीठा होता है। –ससो

है। यदि किसी परिवार का वंश समाप्त हो जाये तो उसके समकक्ष परिवार के सदस्य का चयन किया जायेगा जिसका चुनाव सर्वसम्मत से होगा और फिर वह उसी प्रकार पीढी दर पीढी चलता रहेगा। सर्वखाप पंचायत के सभी सदस्य सर्वखाप के प्रधान को छोडकर स्थाई परम्परागत पीढी दर पीढी चलते है। सर्वखाप पंचायत के प्रधान का चयन खाप प्रमुख, अपने में से उसी दिन करते हैं जिस दिन सर्वखाप पंचायत की बैठक होती हैं। पंचायत की समाप्ति पर सर्वखाप प्रधान का पद समाप्त हो गया। सर्वखाप पंचायत के मंत्री का पद उसी प्रकार स्थाई हैं जिस प्रकार उसके अन्य पद स्थाई हैं। सर्वखाप के गठन से लेकर आज तक सर्वखाप का कार्यालय उतर प्रदेश में मुजफरनगर जिले के गांव सौरम में स्थापित हैं। वहां पर प्रारम्भं से लेकर आज तक रिकार्ड मौजूद है जिसे मंत्री जी ने सम्भाल कर रखा हुआ है। सर्वखाप पंचायत की बैठक बुलाने तथा उसका स्थान निश्चित करने का अधिकार भी, मंत्रीजी को ही प्रारम्भ से, सर्वखाप के नियमअनुंसार प्रदत है।

सर्वखाप पंचायत के कर्तव्य एवं दायित्व

सर्वखाप पंचायत अपने गठन से लेकर आज तक अनेक सामाजिक कर्तव्यों एवं कार्यक्रमों को सर अंजाम दे चुकी है और देती चली आ रही है। जैसे कि पहले कहा गया है कि सर्वखाप पंचायत का गठन जाट राजा हर्षवंधन ने किया था और इस संगठन को जाटों ने ही अपनाया तथा इसकी सीमाएं भी जाटलैड यानी देशवाली जाटों तक ही सीमित हैं। परन्तु सर्वखाप पंचायत के क्षेत्र में अन्य जितनी भी बिरादरियां व जातियां बसती हैं यदि वे भी सर्वखाप को अपना समर्थन, उसमें अपनी आस्था, उसके नियम और कार्यक्रमों में अपनी भागरदारी के लिये वचनबद्ध हों, तो सर्वखाप के पदाकारियों को उन्हें साथ मिलाने में कोइ आपति नही है। यह बात सर्वखाप के गठन के समय से स्पष्ट कर दी गई थी जो आज भी सर्वखाप के रिकार्ड से, जो सौरम गांव में, उसके कार्यालय में मौजुद है, देखी जा सकती है। सर्वखाप का इतिहास बताता है ओर यह उसकी पंचायत की कार्यवाहियों में लिखा पडा है, जिसमें दर्ज है कि अमुक पंचायत में, अमुक, अमुक जातियों में हिसा लिया। जिस प्रकार सर्वखाप के शाब्दिक अर्थों में ही उसकी व्यापता का भाव मिलता है। उसी प्रकार इसके पदअधिकारी भी दूसरों को साथ मिलाने में अपनी उदारता का परिचय देते चले आये हैं सर्वखाप के रिकॉर्ड के अनुसार सन् 1194 की सर्वखाप पंचायत में मेहरचन्द त्यागी, हाड़ासिंह अहीर, मोहन सिंह कायस्थ, मतीराम गुजर, देवल सिंह सैनी आदि ने भाग लिया। इसी प्रकार सन् 1287 की सर्वखाप की पंचायत में 60 हजार जाट, 25 हजार अहीर, 40 हजार गुर्जर, 38 हजार राजपूत और 5 हजार सैनियों ने भाग लिया। अतिरिक्त इसके सन् 1490, सन् 1498, सन् 1503, सन् 1759, सन् 1856, सन् 1857, सन् 1940 में हुई सर्वखाप पंचायतों में जाटों के इलावा बिरादरी एवं जातियों के प्रमुखों के नामों का उल्लेख है। सर्वखाप के गठन से लेकर सन् 1857 की जनक्रांति तक सर्वखाप में योद्धाओं का प्रचलन जारी रहा। प्रत्येक गांव में अखाडे होते थे, युवकों एवं पहलवानों को अस्त्र–शस्त्रों का प्रशिक्षण दिया जाता था, 18 वर्ष की आयु से 40 वर्ष की आयु तक के प्रत्येक पुरूष को 'खाप' के लिये लड़े जाने वाले युद्ध के लिये तैयार रहना होता था। जब रजिया सुल्तान के राज्य में गृह युद्ध हुआ तो हजारों योद्धाओं ने रजिया को उसके विरोधियों से मुक्त करवाया था। सन् 1194 में कुतुबुद्दीन ऐबक के अत्याचारों के विरूद्ध हिसार में सर्वखाप पंचायत की, ऐबक के विरूद्ध पंचायत कके योद्धाओं ने जंग की ओर ऐबक को मुह की खानी पड़ी। सन् 1197 में चौधरी भीम देवी की अध्यक्षता में, बढ़ोत में, बादशाह द्वारा लगाये गये जजिये के विरूद्ध पंचायत हुई। शाहीसेना और सर्वखाप के योद्धाओं के बीच घमासान युद्ध हुआ, बाद में बादशाह ने जजिया को हटाकर पंचायत से समझोता किया। सन् 1199 में हरिपाल राणा की अध्यक्षता में, टीकरी गांव में पंचायत हुई। निर्णय लिया गया कि प्रत्येक बलिष्ठ युवक को सेनिक बनाया जायें, प्रत्येक गांव में अखाड़ा हो। विवाह–शादियों में खर्च कम किया जाये, दस्तकारों की, सभी प्रकार की व्यवस्था पंचायत करें, और दस्तकार बढ़िया अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण करें। सन् 1287 में चौ0 मस्तपाल की अध्यक्षता में महानदी के तट पर, गांव शिकारपुर में पंचायत हुई। पंचायत में निर्णय हुये 18 वर्ष से 40 वर्ष के प्रत्येक व्यक्ति को शस्त्रों की ट्रनिंग दी जायें और उन्हें हर समय युद्ध के लिये तैयार रखा जायें। बादशाह द्वारा लगाये जजिये का पूरी तरह बहिष्कार किया गया, आधी उपज सरकार को न देने का निर्णय हुआ, ब्याह–शादियों में बादशाह के आदेश का पालन नहीं किया जायें। सन् 1490 में बढ़ौत और बावली के जंगल में चौ. रामदेव सिंह की अध्यक्षता में पंचायत हुई। पंचायत ने निर्णय लिया कि बादशाह द्वारा लागू किया गया कर अदा नही किया जायेंगा। सन् 1498 में चौ. देवपाल राणा की अध्यक्षता में निरपूणा में पंचायत हुई, पंचायत ने तैमूर लंग का विरोध करने का निर्णय लिया। जोगाराम गुर्जर सेनापति तथा धलिया चूहड़ा, उपसेनापति नियुक्त हुये। तैमूरलंग और पंचायत योद्धाओं के बीच युद्ध हुआ, और तैमूर को अम्बाला के रास्ते वापिस भागना पड़ा। सन् 1503 में चौ. धर्मसिंह की अध्यक्षता में बावली में विशाल पंचायत हुई। पंचायत ने निर्णय लिया की बादशाह इब्राहिम लोधी का कोई फरमान मान्य नहीं होगा और अत्याचार करने पर उसके विरूद्ध युद्ध होगा। बादशाह ने पंचायत का निर्णय स्वीकार किया। सन् 1759 में सिसोली में एक विशाल पंचायत हुई निर्णय लिया गया कि सदा शिव भाऊ की अपील पर उसकी मद्द की जायें। चौ. शोलाल सेनापति तथा चौ. रामकला उपसेनापति के नेतृत्व में एक विशाल पंचायती सेना कुंजपुरा भेजी गई। सन् 1856 में मथूरा के जंगल में, चार दिन चलने वाली विशाल पंचायत हुई जिसका विषय या विदेशी शासकों को देश से बाहर खदेड़ दिया जायें। मीर मुश्ताक मिरासी के अनुसार साई मिया महमूदनशाह सहित सभी सम्प्रदाय और जातियों के लोगों ने उस पंचायत में भाग लिया। स्वामी दयानन्द के गुरू स्वामी विराजानन्द ने उस पंचायत को सम्बोधित किया था और कहा था, 'गुलामी का जीवन कुतों से

भी अधिक पीड़ा दायक होता है। गुलाम देश के नागरिकों के केवल एक ही धर्म होता है, गुलामी से मुक्ति पाने के लिये संघर्ष। सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में सर्वखाप पंचायत के योद्धाओं ने युद्ध में भाग लिया। स्वामी दयानन्द ने भी क्षेत्र के प्रमुख गांवों का दौरा किया और लोगों को स्वाधिनता आन्दोलन में भाग लेने का आह्वान किया। स्वतत्रता संग्राम की समाप्ति के बाद अंग्रेज सरकार ने सर्वखाप के क्षेत्रों को तोड़ डाला। पंचायती क्षेत्र के पंश्चिम भाग (हरियाणा) को पंजाब के साथ मिला दिया। इस प्रकार अंग्रेजों ने पंचायत के भौगोलिक क्षेत्र को छिन्न–छिन्न कर सर्वखाप की शक्ति कम करने का खूब प्रयास किया। इस तरह सर्वखाप पंचायत ने गांव एवं ग्रामीण प्ररिवेश में सामाजिक ताने–बाने को कायम रखने के लिये सामाजिक मान–मर्यादाओं की सम्पुष्टि की, न्यायिक प्रक्रिया को परवान चढ़ाया, आत्मरक्षा एवं स्वाभिमाान के लिये राजा और बादशाहों से भी लौहा लिया, देश भक्ति तथा देश की स्वाधिनता की लड़ाई लड़ी और समय–समय पर समाज में आई कुरीतियों को पनपने नहीं दिया।

<u>पंचायत के अधिकार और बुलाने के तौर–तरिके</u>

सन् 1857 की जनक्रांति के बाद सर्वखाप पंचायत के कार्य क्षेत्र को अंग्रेज सरकार द्वारा छिन्न–भिन्न किया जाने के बाद भी सर्वखाप का मुख्य कार्यालय सौरम गांव में बादस्तूर कायम रहा। वहां पर पंचायत का समस्त रिकॉर्ड आज भी पूर्ववत मौजूद है। पंचायत का प्रचलन और प्रक्रिया भी उसी तरह बनी रही। जहां तक पंचायत बुलाने की बात है, सर्वखाप के नियमनुसार सर्वखाप का मंत्री एवं कार्यालयाध्यक्ष सौरम वाले को यह अधिकार है कि समय–समय पर सर्वखाप की पंचायत बुलाई जायें क्यों कि कोई झगड़ा किसी खाप प्रमुख से असूलझा न रह जाये और सर्वखाप के मंत्री के पास उसकी विधिवत लिखित शिकायत पहुंचने और जिसे मंत्री भी यह अनुभव करे कि उक्त झगड़ा या समस्या तुरन्त सुलझाने दरकार है, तो मंत्री सर्वखाप पंचायत बुलाने के लिये सब खाप प्रमुखों को पत्र लिखकर पंचायत की तिथी एवं स्थान निश्चत करेगा। सर्वखाप की बैठक शुरू होने से पूर्व सभी खाप प्रमुख, झगड़े वाली खाप को छोड़कर, अन्य खाप प्रमुखों में से, केवल उसी पंचायत के लिये सर्वखाप पंचायत की अध्यक्षता करने के लिय प्रधान का चुनाव सर्वसम्मति से करेंगे। जहां तक खाप और उससे नीचे की इकाई से लेकर सर्वखाप की पंचायत तक के समस्त निर्णयों एवं कार्यवाहियों का प्रश्न है रिकॉर्ड के लिये उनकी प्रतिलिपी मंत्री को सौरम कार्यालय में भेजनी आवश्यक है। सर्वखाप पंचायत और उससे निचली इकाई कैसे निर्णय लें ? सामाजिक तानेबाने को चुस्त–दुरूस्त रखने के लिये प्रत्येक प्रकार सामाजिक निर्णय पंचायतों को लेने का अधिकार सर्वखाप की नियमावली प्रदान करती है। सर्वखाप की पंचायत उक्त प्रक्रिया सन् 1857 तक नियमानुसार लेती रही लेकिन उसके बाद सर्वखाप या छोटी इकाईयां ठोस और कडे निर्णय नहीं ले सकी। यदि किसी खाप पंचायत या सर्वखाप ने कोई बडा निर्णय लिया भी तो वह समाज में लागू नही हो सका। लोगों पर कुछ दिनों के लिये उस निर्णय का प्रभाव रहा परन्तु वह स्थाई नहीं रहा। जिस प्रकार गांव निर्णय और जौणाधी जिला झज्जर में सन् 2000 में गहलौत खाप द्वारा लिया गया निर्णय और सन् 2004 में गांव आसण्डा जिला झज्जर में राठी खाप द्धारा लिया गया निर्णय कोर्ट द्धारा निरस्त हो गये उसी तरह अनेक ऐसे ही निर्णय जो समाज में लागू होने से पहले ही अपनी मौत अपने आप मर गए। वर्तमान युग में यदी खाप या सर्वखाप का वजूद कायम रखना हो तो खाप प्रमुखों के लिये यह आवश्यक है कि वे ऐसे निर्णय लें जो समाज में आसानी से लागू हो सके। अब सर्वखाप की पुरानी लकीर पीटने का कोई लाभ नही है जिस समय सर्वखाप की स्थापना हुई थी उस समय राजा और बादशाह अपने दरबारों में न्याय किया करते थे, जिस कारण सर्वखाप पंचायतों द्धारा लिये गए निर्णय समाज में आसानी से लागू हो जाया करते थे। हालांकि वर्तमान युग में भी सर्वखाप या खाप पंचायतों की अनिवार्यता कम नही हुई है क्योंकि प्रत्येक गांव में सरकार द्धारा गठित सरकारी पंचायतें में सरकार की ग्राटं या अपने साधनों द्धारा विकास कार्य करवाने तथा सरकारी अधि ाकारी की जी–हजूरी के सिवा कोई सामाजिक कार्य करने में असमर्थ हैं। आज सरकारी पंचायतों की भूमिका नगण्य होने के कारण खाप पंचायतें ग्रामीण क्षेत्रों में आपसी भाई–चारा कायम रखने में सक्षम हो सकती हैं। परन्तु सर्वखाप पंचायत की नियमावाली के अनुसार कोई खाप पंचायत आज खरी नही उतर रही है। गांव का कोई भी लठैत ऐरा–गैरा खैरा खाप प्रमुख बनकर चौपाल में आ खडा होता है। आज कल सर्वखाप पंचायत के किसी भी नियम का कोई पालन कहीं नहीं हो रहा है। जिस कारण खापों द्धारा लियें गए निर्णय बहुत जन्दी बेअसर हो जाते हैं। गांव में आए दिन कत्ल हो रहे हैं। जिस कारण आज प्रत्येक गांव गुटबाजी का शिकार होकर रह गया हैं। ऐसी परिस्थिति में पंच और पंचायत की अहमीयत बहुत कम हो गई है। न फैसला करने वाला अपने फैसले का धर्म निभा रहा है और न फैसला से प्रभावित हाने वाले लोग फैसलें का पालन कर रहें है। जिस कारण सर्वखाप या खाप पंचायतों का केवल समाज में नाम ही बाकी है। वरना तो किसी समय समाज में यह कहावत थी, "अकेले जाट से तो लडिये मत और जाटों की पंचायतें से डरियें मत।" यह इसलिए कि जाटों की पंचायत है, सर्वखाप पंचायत है और वह है न्याय का प्रतीक। जाट सदा न्याय प्रिय रहा है और अपने पंचायत द्वारा भी न्यायिक फैसले किये है। आज सर्वखाप पंचायत का सगंठन ढीला पढने से जाटों को ही हानि है। जाट शराब पीने लग गये, जाट लाबू मार करने लगा, जाट अनुशासन हीन हो गया, जाट के आपसी भाई चारे में किकार आ रहा है। सर्वखाप संगठन नहीं रहा है। सर्वखाप पंचायत में खापों के नामों से यह सिद्ध होता है कि यह पंचायत जाटों की है जैसे गठवाला खाप, दहिया खाप, श्योरान खाप आदि। यदि आज जाट प्रमुख मिलकर सर्वखाप पंचायत की नियमावाली के आध ाार निर्णय लें तो समाज की भलाई है। वास्तव में सर्वखाप पंचायत व्यवस्था समाज में कुरितियों आदि अकुंश पर लगाने का एक अच्छा संगठन है जिसे पुनः स्थापित किया जाना चाहिये।

हृदय की कोई भाषा नहीं होती। हृदय से बातचीत करता है। –महात्मा गांधी

भारत - विभाजन पर पुर्निविचार

– डॉ. धर्मचन्द्र विद्यालंकार

भारतीय जनमानस मूलतः भावुक है। अतएव यहाँ पर धर्म और भक्ति–भाव के लिए मनोभूमि बडी ही उर्वर है। क्योंकि उस सबके लिए तथ्य–संग्रह और तर्क–विर्तक के लिए कोई आवश्यकता ही कब होती है। भक्ति तो भावनाओं का अनाहत औार अनाविल प्रवाह ही है; जिसमें तर्क और विचार के सारे ही वृक्ष ऊब–डूब जातें हैं। दर्शन में फिर भी तर्क–विर्तक की गुंजाइश शेष है लेकिन धर्मचिन्तन और भक्तिभावना तो भावनाओं के जल से ही हरे–भरे रहतें हैं। आजकल भारतवर्ष में ईशभक्ति की ही भाँति राष्ट्रभक्ति का भी ज्वार उठ रहा है।

संयोग से वह भी उन तथाकथित राष्ट्रभक्तों के द्वारा उठाया जा रहा है, जिन्होनें भूलकर भी स्वाधीनता संग्राम में भाग नहीं लिया था। बल्कि जो लोग अपने ही देशवासियों को धर्म के आधार पर बाँटकर राष्ट्रीय एकता को तार–तार कर रहे थे। आजकल वही सता–शिखरों पर बैठकर स्वयंभू देशभक्त बनकर दूसरों को राष्ट्रभक्ति के प्रमाण–पत्र बाँट रहे थे।जिस भी सगंठन अथवा समाज पर अतीत में अपना कोई राष्ट्रीय नायक नहीं रहा होता है तो वह दो कार्य किया करते हैं। सर्वप्रथम, दूसरे दलों या सगंठनों के महानायकों को अपनी विचारधारा के रगं में रगंकर दिखाना जैसे कि आजकल सरदार पटेल और महात्मा गाँधी को दर्शाया जा रहा है। दूसरा कार्य ऐसे अधि–नायकवादी दल या संगठन यह करतें हैं कि वे दूसरे दलों के महापुरूषों को दुर्नाम करतें है।

इसके भी दो उपाय हैं–एक उनका चरित्र हनन करना और दूसरे उनकी रीती–नीतियों को राष्ट्र–विरोधी बताकर उन पर ही अतीत की राष्ट्रीय दुर्घटनाओं अथवा भूलों का सारा दायित्व या बोझ डाल देना। आज यही सब हो रहा है। महात्मा गाँधी से लेकर सरदार पटेल तक को आज दक्षिणपंथी सताधीश अपनी विचारधारा का वाहक बताते हुए नहीं अघाते हैं। आश्चर्य कि बात यह है कि कल तक जिस गाँधी को राष्ट्रीय सेवक–सघं के लोग राष्ट्रपिता नहीं मानते थे और भारत–विभाजन के लिए भी उन्हें ही उतरदायी करते थे; अब न जाने क्यों; एकाएक उनका गाँधी–प्रेम उमड आया है।

वरना हमने अधिकाँश संघी लोगों के श्रीमुख से यही उपालम्भ सुना है कि जब भारतवर्ष का विभाजन धर्म के आधार पर हो ही गया था तो भी महात्मा जी ने इतने सारे मुसलमानों को यहाँ पर बेवजह क्यों रख लिया। ऐसे धर्म–धुरन्धरों को भारतीय इतिहास की इतनी सतही जानकारी है कि वे देश–विभाजन के समय सम्पूर्ण हिन्दु–मुस्लिम जनसंख्या की ही अदला–बदली अथवा देशान्तरण तक मान बैठते हैं। जबकि बँटवारा केवल इसी आधार पर हुआ था कि जहाँ पर हिन्दु जनसंख्या का बहुमत होगा, वे प्रदेश या प्रान्त भारत में ही रहेंगे और जहाँ पर भी मुस्लिम मतावलम्बी जन–गण मण की बहुलता होगी, वही प्रान्त पाकिस्तान के अगं होंगें। इस आधार पर सिन्ध, ब्लोचिस्तान, पख्तूनवा और सम्पूर्ण बगांल एवं पंजाब पाकिस्तान में ही जाने थे क्योंकि वहाँ पर मुस्लिम जनसंख्या बहुमत में थी।

कायदे से सम्पुर्ण बंगाल और पूरा संयुक्त पंजाब जिन्ना साहब मांग रहे थे, मुस्लिम लीग की ओर से। लेकिन क्योंकि बगांल में मुस्लिम जनसंखया यदि 52 प्रतिशत थी तो वह पंजाब में 56 प्रतिशत थी। लेकिन पं नेहरू और महात्मा गाँधी ने जनरल वायसराय माउन्ट बेटन को यह समझाया था कि इन्हीं प्रान्तों के अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर ही तो सीधी कार्यवाही (1946) के नाम पर मुस्लिम–लीगी गुंडों ने कहर बरपाया था। आज आप पुनः उन्हीं को भेडियों के रहमों–करम पर क्यों छोड रहे हैं।

यहाँ पर यह ज्ञातव्य है कि संयुक्त बंगाल में ही कलकता और नौआखली में अल्पसंख्यकों को बंरी तरह से मारा–काटा गया था गाजर और मूली की भाँति। क्योंकि वहाँ पर मुस्लिम–लीग और हिन्दु महासभा की संयुकत सरकार थी। लेकिन संयुक्त पंजाब में चौ. छोटुराम की जमींदार–लीगी सरकार होने के कारण वहाँ पर हिन्दुओं की इतनी दुर्दशा या मारकाट नहीं हुई थी। बल्कि भारत–विभाजन के प्रत्यक्षदर्शी कामरेड माखन लाल जी हमें यही बताया करते थे कि जमींदारा–लीगी मुसलमानों ने एक हाथ में लालटेन और दूसरे हाथों में लाठी या जेली लेकर अपने–अपने पडौसी हिन्दुओं की रक्षा की थी रात–भर जागकर पहरे देकर। फिर भी रावलपिंडी और लाहौर जैसे नगरों में सिखों को मारा–पिटा गया था। कुछ गांवों को जला दिया गया था। स्त्रियों के साथ भी दुव्यर्वहार किया गया था। तभी तो राष्ट्रीय काग्रेस और नेहरू तथा पटेल ने भारत–विभाजन का विषमान किया था। बाद में गाँधी जी भी मान गये थे।

लेकिन भागते चोर की लंगोटी की तरह से नेहरू और गाँधी ने अपने तर्को की तलवार और अपने व्यक्तिगत प्रभाव को पूरा–पूरा प्रयोग करके उन्होंने हिन्दू बहुल पं बंगाल और पूर्वी पंजाब को भारत में ही रखवा लिया था। क्या यह उनकी छोटी या नगण्य उपलब्धि थी। वरना जिन्हा साहब और मुस्लिम लीग तो पूरे ही बगांल और पंजाब को लेने पर अडे हुए थे। क्योंकि उनका तर्क था कि बजाय जिलों या तहसीलों के केवल प्रान्तों अथवा प्रदेशों को ही विभाजन का आधार बनाया जाना चाहिए। लेकिन पं नेहरू और गाँधी की जोडी ने यह संदर्भ दिया था कि इससे साम्प्रदायिकता की समस्या का हल कैसे होगा वह तो जस की तस बनी रहेगी। बल्कि और भी अधिक भयावह होगी। क्योंकि जब भारत के एक और अखण्ड रहते हुए वहाँ पर अलपसंख्यक सुरक्षित नहीं है तो इस्लामी धर्मराज कायम होने पर वे पाकिस्तान में कैसे स्वतन्त्र और सुरक्षित रह पायेंगें।

उनका यह तर्क माउण्ट बेटन को जँच गया था। अतएव उन्होंने जिन्ना साहब को बुलाकर यह बता दिया था कि बंगाल और पंजाब का पुर्न–विभाजन होगा। यह सुनकर जिन्ना बिफर उठे थे– मुझे तो कटा–फटा पाकिस्तान ही दिया जा रहा है। गर्वनर जनरल

अहंकार से तप नष्ट हो जाता है और इधर–उधर कहने से दान निष्फल हो जाता है। –मनु

ने उनको दो टूक शब्दों में बोल दिया था – "मि. जिन्ना यदि आपको लेना है तो यही सब मिलेगा; वरना अगली बैठक में आपके द्वारा प्रस्तावित पाकिस्तान का प्रस्ताव पूर्णतः निरस्त कर दिया जायेगा।" तभी जिन्हा ने अपनी स्वीकृति दी थी।

अब रही देशी राजे–रजवाडों की बात। अंग्रेजी शासन–काल में दो प्रकार का भारत था– "एक वह जो कि सीधे बिट्रिश सरकार ने यह प्रावधान किया था दो संघ–राष्ट्रों का विकल्प उनके समक्ष था। एक भारतीय राष्ट्र–संघ और दूसरा पाकिस्तान राज्य–सघं। देशी रियासतों के शासकरण अपनी सुविधानुसार चाहे जिस सघं में अपने राज्य का विलय स्वेच्छापूर्वक कर सकते थे।

हैदराबाद का निजाम और जूनागढ का नवाब अपनी–अपनी रियासतों का विलय पाकिस्तान सघं–राज्य में करना चाहते थे। लेकिन तत्कालीन भारत सरकार के ग्रहमंत्री सरदार पटेल ने उन प्रदेशों की जनता में हिन्दु बहुमत और उसकी इच्छा को देखते हुए सैन्य–बल का प्रयोग करके उनका विलय भारतीय सघं–राज्य में करा लिया था। रही कश्मीर की समस्या, वहाँ पर स्थिति और भी विकट थी। वहाँ पर शासक यदि हिन्दु था तो प्रजा या जनता में मुस्लिम बहुमत था। अतएव वहाँ का हिन्दु शासक हरिसिहँ बडी ही दुविधा में था। उसके एक ओर कुआँ था तो दूसरी ओर खाई थी। क्योंकि यदि वह भारतीय–सघंराज्य में विलय करता था तो वहाँ पर जनतन्त्र की स्थापना के कारण देशी–रियासतों का अस्तित्व ही खतरे में था। उधर, पाकिस्तान में 'इस्लामी धर्म–राज्य' की स्थापना होंने के कारण हिन्दु राजा की अपनी स्थिति क्या होगी। यही सब ऊचँ–नीच सोच–विचार का राजा हरिसिहँ ने स्वतन्त्र राज्य बनाये रखने का निर्णय लिया था और समय पर विलय–प्रस्ताव नहीं भेजा था।

उधर पाकिस्तान शासकों ने मुस्लिम बहुल कश्मीर को हडपने की ठानी थी। लेकिन सेनापति जनरल ग्लांसी ने सेना को युद्व की अनुमति प्रदान नहीं की थी। अतएव उन्होनें सैनिकों को ही कबिलायी ड्रेस पहनाकर उनके हाथों में हथियार थमाकर कश्मीर में घुसपैठ करा दी थी। जब कबाईली सेना श्रीनगर के निकट तक आ गई थी, तभी वहाँ के हिन्दु–शासक ने भारतीय सघं में सम्मिलित होने के लिए विलय प्रस्ताव प्रेषित किया था।

उस विकट परिस्थिति में पं नेहरू प्रधानमंत्री भारत सरकार ने अपने पुण्य–प्रभाव का प्रभूत प्रयोग करके तीनों सेनाओं के सेनापति र्ग्वनर जनरल वायसराय माउण्ट बेटन से 'युद्व–प्रस्ताव' पर हस्ताक्षर करा लिये थे, जबकि पाकिस्तान अंग्रेज सेनानायक ने वैसा करने से स्पष्ट इंकार कर दिया था। तभी सैन्याभियान करके तीन–चौथाई कश्मीर को पाकिस्तान के अधिकार से मुक्त करा लिया था। बाद में दोनों जनरलों के आदेशों से इस विवादित विषय को राष्ट्र सघं (यू. एन.ओ.) में ले जाया गया था। जोकि आज तक भी लम्बित है।

हमारे आजकल के तथा कथित देशभक्त नेहरू जी के व्यक्तिगत चरित्र पर उंगलियाँ उठाकर उन्हें बदनाम करने का कुत्सित प्रयास तो करते हैं, लेकिन उन्होनें माउण्ट बेटन से अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों के चलते पूर्वी पंजाब ओर पं बंगाल को जो भारत में रखवा लिया था, इसको वे क्यों कभी नहीं याद रखते हैं। इसी प्रकार से कश्मीर–अभियान के लिए सैन्याक्रमण की अनुमति वायसराय से लेना यह भी उन्हीं के बूते की आत थी। वरना यदि पाकिस्तान के अंग्रेज जनरल की भाँति माउण्ट बेटन भी भारतीय सेना को युद्व की अनुमति नहीं देते तो कश्मीर आज पुर्णतया पाकिस्तान अधिकार–क्षेत्र में ही होता। अतएव केवल कोरी अवधारणाओं और अर्धसत्यों के बल पर ही हमें ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण नहीं करना चाहिए। अपितु तथ्यपूर्ण एवं तर्कसंगत द्रष्टि से ही उन पर विचार–विमर्श करना चाहिए।

नई सोच

एल.आर. बुड़ानियाँ, चण्डीगढ

आज जो हमारे भाई गांवों को छोड़कर शहरों में आ गये हैं वो ठीक नौकरी व व्यापार के हिसाब से अच्छे आर्थिक हालात में है तथा पढ़ाई भी ठीक है और उनके बच्चे भी अच्छी स्कूलों में पढ़ रहे हैं। लेकिन उन में अन्धविश्वास कम होने की बजाय बढ़ता जा रहा हैं। मैं भी छोटे गांव को रहने वाला हूँ जब हम छोटे थे तब सुनते थे कि अनपढ़ लोगों में अन्धविश्वास ज्यादा होता है और पढ़ाई से कम होता है।

लेकिन आज उल्टा हो रहा है गांवों से ज्यादा शहरों में पढ़े लिखे लोगों में ज्यादा अन्धविश्वास फैल रहा है। एक उदाहरण देता हूँ जब बच्चे शादी वाले होंते हैं तब पंड़ितों के पास कुन्डली ले कर जातें हैं वो बताते हैं कि यह तो मांगलिक है इसकों तो मांगलिक के साथ ही शादि करोंगे तब ही ठीक एक की मौत हो जायेगी। आज से 2025 वर्ष पहले तक नहीं तो गांव से मैंने यह शब्द ही नहीं सुना था। इसका मतलब मांगलिक केवल शहरों में ही पैदा होते हैं। 80 प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं वहां आज भी 1–2 प्रतिशत को छोड़कर आज भी शायद ही कोई जानता हो कि कोई बच्चा मांगलिक होता है। ये मांगलिक होने का क्या नुकसान या फायदा है।

भाईयों अगर बच्चों का मिलाना ही है शादि के पहले तो मैडिकल रिर्पोट मिलनी चाहिए। जैसे कोई पारिवारिक बिमारी सुगर, गठियाँ है आदि। हीमोगलोंबल कितना है बल्डग्रुप कौनसा है। और भी कोई मैजर बिमारी ना हो यह ज्यादा जरूरी है कुन्डली की बजाय एक बात का शादि के समय ध्यान रखने की जो शुभ मुहुर्त का चक्कर है उससे बचना भी बहुत जरूरी है। जब आपको ठीक लगे और उस दिन ज्यादा शादियां ना हो उस दिन आको आराम से हर चीज मिलेगी और सही रेट में चाहें कैटरिंग हो चाहे मैरीज पैलेश हो कुछ भी हो ओर उस दिन आपके प्रेमी मित्र भी सभी आ जायेंगे। अगर कोई आना भी चाहे उस दिन 10 शादियों के कार्ड आये है तब वह आदमी चाहते हुये भी 9 जगह पर नही जा पायेगा।

नई सोच अपनाओं आगे बढ़ो और जीवन खुशहाल बनाओं।

हम आजाद तभी पाते हैं, जब हम अपने जीवित रहने के अधिकार का पूरा मूल्य चुका देते हैं। –रवीन्द्रनाथ टैगोर

म्हारा प्यारा हरियाणा

– डा0 महेन्द्र सिंह मलिक

छोटा सा गाम मेरा पुरा बिग् बाजार था।
एक नाई, एक खाती, एक लुहार था।।
छोटे छोटे घर थे, हर आदमी बङा दिलदार था।
छोटा सा गाम मेरा पुरा बिग् बाजार था।।
कितै भी रोटी खा लेते, हर घर मे भोजऩ तैयार था।।
बिटोङे पे घिया तौरी हो जाती।
जिसके आगे शाही पनीर बेकार था।।
छोटा सा गाम मेरा पुरा बिग् बाजार था।।
दो मिऩट की मैगी नाए झटपट दलिया तैयार था।
नीम की निम्बोली और शहतुत सदाबहार था।।
अपणा घङवा कसकै बजा लेते,
लख्मी पुरा संगीतकार था।
छोटा सा गाम मेरा पुरा बिग् बाजार था।
मुल्तानी माटी ते जोहड़ में नहा लेते।
साबुन अर स्विमिंग पूल बेकार था।।
अर फेर कबड्डी खेल लेते, कुन्सा म्हारे क्रिकेट का खुमार था।।
छोटा सा गाम मेरा पुरा बिग् बाजार था।।
बुढ़या की बात सुन लेते, कुन्सा टेलीविज़न अर अखबार था।।
भाई नै भाई देख कै राज़ी था,
सबमै घणा प्यार था।
छोटा सा गाम मेरा पुरा बिग् बाजार था।
वो प्यार, वो संस्कृति मैं इब कड़े तै ल्याऊं,
या सोच सोच कै मैं घणाए दुखी पाऊं।
जै वोए टैम फेर आज्याए तो घणाए मजा आज्या।।
मैं अपनी असली जिन्दगी जी पाऊं,
अर मैं इस धरती पै सो सो शीश झुकाऊं।
!! म्हारा हरियाणा ।। प्यारा हरियाणा।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl 27/5'3" B.Com, MBA (Finance) Employed in MNC, Mohali. Avoid Gotras: Saroha, Phaugat, Sehrawat. Cont.: 09888462399
- SM4 Jat Girl DOB March 89. 28.6/5'3" MCA, Employed in Punjab & Haryana High Court. Avoid Gotras: Sheoran, Punia, Sangwan. Cont.: 09988359360
- SM4 Jat Girl 27/5'7" BDS, Pursuing for MDS, Father Retired Army Officer. Avoid Gotras: Narwal, Mor, Kadyan. Cont.: 08556074464
- SM4 Jat Girl DOB (18.10.84) 33/5'3" B.Com, M.Com from Kurukshetra University, Computer Course in Financial Accounting & Honours Diploma in Computer Application. Doing job as Accountant of Share Market (BSE) at Panchkula. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri. Cont.: 09468089442, 08427098277
- SM4 Jat Girl DOB 1990 27/5'7" Post Graduate, Employed at Chandigarh. Only well settled family with urban background, preferably in Tricity. Avoid Gotras: Khatkar, Malik. Cont.: 09888626559
- SM4 Jat Girl (DOB 29.06.90) 27/5'3" Graduated from Shri Ram College of Commerce, Delhi. Employed as India Brand Manager for Swift in Maruti India Pvt. Ltd. Delhi. Earning 14 LPA. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Rathee, Dahiya, Lamba. Cont.: 09988099453
- SM4 Jat Girl DOB 04.05.1990, 5'3" M.C.A., B.Ed. Math. Avoid Gotras: Sangwan, Phogat, Danghi. Cont.: 9813776961
- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.88) 29/5'3.6" M.Sc. Math, B.Ed. Working in a reputed private School. Avoid Gotras: Bankura, Mann, Narwal. Cont.: 09354839881
- SM4 Jat Girl (DOB 13.06.90) 27/5'2" B.Tech (CSE) Employed as Assistant in Central Excise Department at Chennai. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Joon. Cont.: 09780336094
- SM4 Jat Girl (DOB 08.11.90) 26.10/5'3" Employed as Staff Nurse in Government Hospital, Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat. Cont.: 09463881657
- SM4 Jat Girl (DOB 13.10.91) 25.10/5'5" B.A. LLB, (Hons) LLM, Advocate in Punjaab & haryana Court. No dowery seeker. Preferred match Chandigarh, Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Deswal. Cont.: 09417333298
- SM4 Jat Girl (DOB March1990) 27.5/5'7", Convent educated, Post Graduate, Employed, Highly educated family. Please contact only well educated family. Tcicity (around Chandigarh) based family preferred. Avoid Gotras: Sura, Malik. Cont.: 09888626559
- SM4 working Jat Girl 26/5'3" BPT, MPT, CMT, Employed as Consultant Chysiotheraphy in private hospital in Panchkula. Avoid Gotras: Chhikara, Dahiya, Bajar. Cont.: 09467680428
- SM4 Jat Girl (DOB 02.12.91) 25.8/5'5" M.Com, B.Ed. Employed as teacher in a private school at Zirakpur with Rs. 16000/- PM. Avoid Gotras: Kadyan, Jakhar, Malik. Cont.: 09815098264
- SM4 Jat Girl (DOB 21.04.88) 28.3/5'1" M.Tech from P.U. Chandigarh, GATE cleared. Avoid Gotras: Dhull, Goyat,

जो अपना चित्र मुझमें लगा देते हैं, वे मेरी कृपा से संसार के सभी दुःखों से पार हो जाते हैं। –श्री कृष्ण

Bhal. Cont.: 09467671451

- SM4 working Jat Girl 24.6/5'7" B.Tech, MBA. Preference Defence Officer. Avoid Gotras: Chhikara, Chhillar, Dalal, Tomar, Shokeen. Cont.: 09313662383, 09313433046
- SM4 Jat Girl (DOB 23.10.87) 29.8/5'5" B.Com, MBA, MIS, M.A (Economics.) Avoid Gotras: Panghal, Baloda, Bhaghasra. Cont.: 09463967847, 09463969302
- SM4 Jat Girl(DOB 07.02.90) 26.10/5'10" B.Tech (ESE) M.Tech (ESE) from MDU Rohtak. GATE qualified. Avoid Gotras: Kadian, Rathee, Sangwan. Cont.: 08447796371
- SM4 Jat Girl 26/5'5" B.D.S. Employed in Parexel Company in I.T. Park Chandigarh. Family settled at Chandigarh. Tri-city match preferred. Avoid Gotras: Kundu, Malik, Sandhu. Cont.: 09779721521
- SM4 Jat Boy (DOB13.10.86) 31/6' B.Tech (ECE) Employed in Punjab Judicial Department. Avoid Gotras: Siwach, Dahiya, Suhag. Cont.: 09988005272
- SM4 Jat Boy (DOB 05.06.88) 29.2/5'11" Employed as Computer Programmer in Food & Supply Deptt. Kaithal. Familay settled in Kaithal. Six acre Agriculture land. Avoid Gotras: Ravish, Sheoran, Badu, Kala. Cont.: 09729867676
- SM4 Jat Boy 28/5'8" LLB, Practising Advocate, Own house, plot, flat, 3 acre agriculture land. Father Senior Advocate. Avoid Gotras: Balyan, Nehra. Cont.: 09996844340, 09416914340
- SM4 Jat Boy (DOB 16.08.88) 29/5'10" MA (Public Admn.) Employed as Govt. JBT Teacher at Panchkula. Avoid Gotras: Dhillon, Siwach, Swag. Cont.: 09417424260
- SM4 Jat Boy (DOB1882)35/5'9" M. A. (Eng.) M.A Mass Communications, M.Phil mass communications and Ph.D mass communications from K.U.K. Working as Deputy Chief Reporter in Dainik Jagran with Rs.35000/- P.M. Father ex-serviceman, mother retired teacher. Avoid Gotras: Malik, Gahlawat. Cont.: 09416616144, 08901447789
- SM4 Jat Boy (DOB 16.02.90) 27.4 /5'8" B.Tech. Mechanical. Employed in TATA Business Support Services Ltd. Mohali. Own house in Manimajra Town Chandigarh. Agriculture land and house in native village in District Hisar. Avoid Gotras: Kajla, Kaliramna, Khyalia. Cont.: 09915791810
- SM4 Jat Boy (DOB 25.12.91) 25.6/6'2" Employed as J.E. in Corporation Panchkula. Avoid Gotras: Malik, Vigay, Rajan. Cont.: 0172-4185373
- SM4 Jat Boy 29/5'11" Employed as team leader in IT Park Chandigarh with Rs. 8 lakh package PA. Avoid Gotras: Khatri, Ohlyan, Rathee. Cont.: 09833286255, 09468463165
- PQM4 handsome Jat Boy 30/5'10" MBA (finance) from France. CFA, B.Tech (PEC). DHA level three cleared. Employed in MNC at Mumbai with good package. Family settled at Panchkula. Only son. Avoid Gotras: Mor, Gehlawat, Rathee. Cont.: 08360609162
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 27/5'10" B. Tech. from India, M.Tech from Canada. Doing Job in TRONTO (Canada). PR status. Avoid Gotras: Sarao, Basiana, Ojaula. Cont.: 08288853030
- SM4 Jat Boy (DOB13.08.89) 31.7/6'1" MA, Mass Communications from London. Working in MNC Gurgaon with 12,5 lakh package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy 30/5'9" B.Tech, MBA (UK) Marketing Manager, 60 lacks PA. Avoid Gotras: Tomar, Poriya. Cont.: 09412834119
- SM4 Jat Boy 30/5'10" MBA, Working in MNC, CTC 14Lpa, Preferred B.Tech, MBA/Lecturer. Avoid Gotras: Panwar, Kadian, Dalal. Cont.: 09810280462
- SM4 Jat Boy (DOB 30.09.89) 27.6/5'10" B. Tech. Computer Engineering. Two flats and one showroom in Gurgaon. Father retired Principal. Avoid Gotras: Sheokand, Malik, Punia. Cont.: 09871044862
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.85) 31.4/5'11" MBBS, M.S. from PGI Rohtak. Posted at Bhalot (Rohtak) as regular Medical Officer. Preference M.D.,MBBS match. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 28.10.90)26.10/5'11" BDS, MDS. Father S.D.O. retired from Haryana Government. Avoid Gotras: Malik, Phogat, Antil. Cont.: 09416770274
- SM4 Jat Boy (DOB 01.08.85)31.6/6'1" M.A.,Mass Communication from London (England). Employed in MNC Company at Gurgaon with Rs.12.50 Lakh Package PA. Avoid Gotras: Dahiya, Ahlawat. Cont.: 09717616149
- SM4 Jat Boy (DOB Nov.1989) 27.1/6' B.Sc in Hospitality & Hotel Administration. Occupation Hotel Industries in Dubai, Package Rs.10 lakh P.A. Father, Mother Haryana Govt. Employees at Panchkula. Avoid Gotras: Kundu, Dahiya, Tomar (Not direct Sangwan, Bhanwala). Cont.: 09416272188, 09560022263, 09416504181

आवश्यक सूचना

आप को जानकर प्रसन्नता होगी कि सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला में माननीय सांसद श्री रतन लाल कटारिया द्वारा 12 नवम्बर 2017 प्रातः 11 बजे इलक्ट्रोनिक लिफ्ट का उद्घाटन किया जायेगा। इस लिफ्ट के लिये माननीय सांसद द्वारा MPLAD Fund से 11 लाख रुपये की अनुदान राशि जारी की गई थी। इस दिन भवन परिसर में परिवार मिलन सम्मेलन भी आयोजित किया जायेगा।

अतः आप सभी से निवेदन है कि इस अवसर पर परिवार सहित पधारने की कृपा करें।

जाट सभा चण्डीगढ़/पंचकूला

Air Pollution- the giant (silent) killer

- R.N. Malik
- Mudit Mishra

A startling news appeared in print media on 20th October, 2017. It states that," 9.0 Million people died prematurely in 2015 due to air pollution induced diseases. This news item is based on the report published in Lancet, a renowned medical journal. Out of 9.0, 2.5 million died in India alone. Out of 2.5, 1.81 million people died due to air pollution induced diseases. Balance 0.64 million deaths were hastened due to water pollution. Total 9.0 million deaths due to air pollution related ailments were more than the deaths caused by malaria, tuberculosis and AIDS put together. The most people at risk are in Asia and Africa and shamefully India tops the list of individual countries falling in this category. China is close second with 1.8 million deaths but this is no consolation. Common pollution related ailments are cardiovascular problems, chronic obstructive pulmonary disease (COPD), lung cancer, strokes, sinusitis and allergies. These diseases are not fatal as such but are procrastinating in nature causing deaths over a period of time. The financial costs and loss of man hours are also tremendous."

We cry over alarming rise in pollution levels at the time of Deepawali and harvesting seasons of Rabi and Kharif crops. Pollution caused by bursting of crackers remains only for a few days. More disquieting part of the problem is the large number of fire accidents causing mostly eye injuries. Fortunately, the ban order of Supreme Court on sale and use of fire crackers in NCR reduced pollution levels and fire accidents significantly. Air pollution caused by burning of rice husk in Oct- November stays for 4-6 weeks. Dense smog causes hazy conditions during the day as smoke particles (soot) remain suspended in the air at low heights due to inversion effect caused by moderate temperatures during this period. Air pollution caused by thrashing process of wheat crop in April-May period also stays for 4-6 weeks. But chemically more toxic air pollution caused by vehicular emissions coupled with dust particles stays round the year in cities and along the highways. We never talk of dust pollution which is 38% of total air pollution of the cities.

It is obvious that constant inhalation of polluted air will damage and stunt the growth and sustense of human body in one way or the other. Very fine suspended particulate matter (PM2.5) caused by different emissions escape the attachment with mucous membrane and enter the respiratory tract and get deposited in the lungs causing fibrosis resulting into allergic asthma and cancer. It also affects the functioning of other vital organs because of reduced oxygen supply. The second part i.e. inhalation of toxic gases (SO2, NOx, CO, lead particles) causes' irritation, suffocation and affect oxygen carrying capacity of blood. The combined effect of all these aforesaid maladies affect the immune system of human body and hasten the death of people already suffering from other diseases like diabetes, heart problems and lung infections. Even otherwise inhalation of polluted air during peak hours of traffic movement causes uneasy breathing and gives a feeling as if you are living in a gas chamber. Accordingly facts and figures of Lancet report look quite convincing

Air pollution caused by different emissions is manageable and activism of Honorable Supreme Court from time to time has shown the way. Initially Honorable Supreme Court ordered Delhi Government to run buses and autos on the compressed gas.Then followed the order to ban the running of old buses and diesel vehicles. NGT banned the burning of rice husk though the states failed to implement the order in to-to. Finally, Supreme Court banned the sale of fire crackers on the eve of Deepawali. On the other hand, Central and State Governments have done very little to grapple with this chronic problem. One wishes if Indian Legislature shows the same will power as the Indian judiciary to fight against this menace

Solutions:

Air pollution is not an intractable problem. Dust pollution is the easiest to control and with least cost. The government only needs to take two steps. Firstly, direct the residents and shop owners to pave or grass the surface lying between the road edge and the building line. Secondly to direct all vacant plot holders to complete 25% construction within a stipulated time period. Dust pollution in developed countries is non-existent simply because all the unbuilt land surface in the urban areas is either grassed or paved. Rice husk problem can be easily tackled if the state governments take two more steps. Firstly, to educate and motivate farmers to convert the rice husk into straw (Turi) with the help of thrashers and then spread and mix the same with the soil with the help of the tractor. The straw so mixed will act as a very good soil conditioner and nutrient to the crops. Secondly the government should set up power plants using rice husk as a fuel. Vehicular pollution (most potential source of damaging human health) can be controlled significantly by taking following five steps.

1. Apply odd-even formula for running of personal cars on selected busy roads and highways.
2. Constructing elevated tracks.(costing Rs 100 crore per km)
3. Allowing the use of only small cars during peak hours.
4. Promoting the use of electric and two seater cars.
5. Providing a comfortable and attractive mass transport system. (Look at the success of metro service in Delhi carrying 30 lac passengers per day)

Pollution caused by thrashing process of wheat crop is preventable if farmers are educated and motivated to provide a cloth curtain barrier some distance away from the thrasher. Control of air pollution at thermal power plant is well known i.e. providing Electrostatic Precipitators (ESPs).

In the final analysis, the air pollution generated by five major sources is manageable provided the central and state governments display the same will power as by the Indian judiciary to take on the air pollution problem from the front. Consequently, the Central and State governments will have to prepare a five-year Master Plan to reduce air pollution by adopting aforesaid measures. If, however, the governments continue to maintain their lethargic approach then only alternative left to save yourself from this scrouge is to start living away from cities. Wearing of masks across your face will only prevent the entry of suspended particulate and not the toxic gases adulterated in the air. Choice is yours.

Note: Shiri RN Malik and Mudit Mishra are visiting Professor and Assistant Professor in civil engineering department of Manav Rachna University, Faridabad

आठ पापों का घड़ा

एक बार कवि कालिदास बाजार में घूमने निकले। एक महिला एक घड़ा और कुछ कटोरियां लेकर बैठी थीं। ग्राहकों के इंतजार में। कालीदास ने महिला के पास जाकर पूछा बहन, तुम क्या बेचती हो? महिला ने बताया कि मैं पाप बेचती हूं। मैं लोंगो सें से कहती हूं कि मेरे पास पाप है, मर्जी है तो ले लो और वे बड़ी प्रसन्नता से पाप ले जाते हैं। कालीदास उलझन में पड़ गए और पूछा, घड़े में कोई पाप होता है। महिला ने कहा, जरूर होता है। मेरे इस घड़े में आठ पाप भरे हुए हैं। बुद्धिनाश, पागलपन, लड़ाई झगड़े, बेहोशी, विवेक का नाश, सद्गुण का नाश, सुखों का अंत और नरक में ले जाने वाले सभी दुष्कृत्य। कालीदास ने पूछा आखिर तेरे इस घड़े में है क्या? वह महिला बोली, "शराब, शराब, शराब।" यह शराब ही उन सब पापों की जननी है। जो शराब पीता है वह उन आठों पापों का शिकार बनता है। इसलिए हमें इन पापों से बचने के लिए न पीने का संकल्प लेना चाहिए।

शराब के अतिरिक्त कई अन्य नशीले पदार्थ हैं, उनसे भी परहेज करना चाहिये। इसलिए कहा गया है:–

अफीम, गांजा, चरस, शराब, सिगरेट या बीड़ी,
इनके पीछे भाग रही है आज की नौजवान पीढी,
इसमें कोई खुशी नहीं, इसमें कोई जिंदगी नहीं,
इन्हें कभी गले न लगाना, यह तो है मौत की सीढ़ी।

अहंकारी का विनाश जरूर होता है। –तुलसीदास

Poster Making Competition on 23-11-2017

For School Going students

A Poster Making Competition will be organized by JAT SABHA, CHANDIGARH for school going students on **23rd November, 2017** from **10 to 11 AM** in the premises of **JAT BHAWAN**, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.

The aim of this Competition is to generate creative spirit among the children and polish the existing potential among them. To widen the scope of talent search in this field and give incentive to the deserving children, it has been decided to classify all the students into three categories as under:-

Category A	**Class III to V**
Category B	**Class VI to VIII**
Category C	**Class IX to XII**

For each category there will be prizes of Rs. 2100/-, Rs. 1500/-, Rs.1100/- and three consolation prizes of Rs. 500/-each. The topic of the Poster Competition will be "**Helpless Farmer**" **(बेसहारा किसान).** Duration of the Competition will of one hour. Entries for the Competition may be sent to **JAT BHAWAN**, 2-B, SECTOR 27-A, CHANDIGARH -160019 by post or personally by 20th November, 2017 up to 5 P.M. with entry fee of Rs. 10/- per participant.

Bus Fare/Conveyance charges of Rs. 20/- per participant will be given to the students/participants of local Chandigarh, participants/students coming from Mohali, Panchkula will be paid Rs. 30/- per participant as Bus Fare/conveyance charges, while students participating in the Competition from Pinjore, Kalka etc. will be paid Rs. 50/- per participant for the Competition. Students/ participants coming from Haryana, Punjab to take part in this Competition will be paid actual to & fro bus fare per participant.

Terms & Conditions of the Competition are as under:-

1. The participants must bring their identity cards or the identity slips along with attested photograph issued by the Head of the Institution/School for eligibility in the Contest.
2. The participants should bring their own drawing material and cardboard. Only drawing sheets will be given by the Competition Organizers.
3. The judgment of the Chairman of the Competition will be final and binding on all.
4. The result of the Competition will be announced on the same day and prize winners will be honoured with cash awards and merit certificates on the eve of Basant Panchmi & Birth Day Celebrations of Deen Bandhu Sir Chhotu Ram on 22 January, 2018 at Sir Chhotu Ram Jat Bhawan, Sector 6, Panchkula.

Further enquiries may be made on Telephone Nos. **0172-2654932, 2641127, Email:jat_sabha@yahoo.com** or personally from the Jat Sabha Office, at **JAT BHAWAN, 2-B, Sector 27-A, Madhya Marg, Chandigarh.- 160019.**

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़
जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया ।